गुनगुनी धूप सी यादें

कविता-संग्रह

अनेकता में एकता का प्रतीक

गुनगुनी धूप सी यादें

कविता-संग्रह

लेखिका

बिमला रावर सक्सेना

अनेकता में एकता का प्रतीक

के.बी.एस प्रकाशन, दिल्ली

ISBN-978-93-86716-05-07

के.बी.एस प्रकाशन

मुख्य कार्यालय :- 18/91-ए, ईस्ट मोती बाग, सराय रोहिल्ला, दिल्ली-110007
शाखा कार्यालय :- 61, शिवालिक अपार्टमेंट, अलकनंदा, नई दिल्ली-110019
शाखा कार्यालय :- 74, एस.के.फुटवेयर, हथवा मार्किट, नज़दीक- पी.एन.बी. बैंक, छपरा, बिहार- 841301
दूरभाष :- 9871932895, 9868089950, 7532868696
Blogger :- https://kbsprakashan.blogspot.in
e-mail :- kbsprakashan@gmail.com

मूल्य : 300.00 रुपये
प्रथम संस्करण 2017 © बिमला रावर सक्सेना
मुख्य आवरण :- बिमला रावर सक्सेना
मुद्रक :- कॉमपेक्ट प्रिन्टर नई दिल्ली

NAME - "GunGuni Dhoop Si Yadein" Kavita Sangrah
by Bimla Rawar Saxena

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम, पात्र, भाषा-शैली एवं स्थान सभी लेखक की

गुनगुनी धूप सी यादें...

जीवन की सरिता बहते हुए जब डेल्टा से गुज़र समुद्र की ओर चलने को हो तो ऐसे मौके पर वह सरिता जिस तरह की कहानियाँ सुनाएगी अपने अनुभवों की ऐसी ही कवितायें जीवन के अनुभूत तथ्यों से सजी हुई हैं विमला रावर सक्सेना जी की। काव्य की कोई भी परम्परा हो, कोई भी विधा हो लेकिन सब का मूल तो मनोभाव ही हैं। कहीं पढ़कर मन उद्वेलित होता है तो कहीं बच्चों सा नाच उठता है। भाव ही तो कविता का निर्माण करते हैं।

उनकी कविता में लोकमंगल की कामना है, समाज का चिंतन है और प्रभु से प्रार्थना करते हुए वे कहती हैं कि :-

प्रभु इतनी विनय सुनो मेरी
मन में न दरारें आ जायें
मानव हैं हम मानव के प्रति
मन में न फासले आ जायें

यह वर्तमान के तथाकथित लेखकों और कवियों के लिए विचारणीय प्रश्न है जो सत्ता के गलियारों की मलाई चाटने के लिए कविधर्म से निरंतर द्रोह कर रहे हैं और वैमनष्यता को समाज में परोस रहे हैं। सत्ता में दलों का आना जाना लगा ही रहता है लेकिन समाज में विकृत मानसिकता को फैलाने का पाप अक्षम्य है। यह कविता और लेखन के प्रति किया गया पाप है।

ज़िंदगी के विषय में वे लिखती हैं कि :-

ज़िंदगी क्या है?
काला सच या सफ़ेद झूठ
कट जाती है पूरी ज़िंदगी
यही जानने में
बोलने वालों की
नीयत पहचानने में

क्या ऐसा हम सब के साथ नहीं है? जीवन में ऐसा ही चल रहा है, एक

अविश्वास सा चारों ओर अँधेरा बनकर फैला हुआ है हम सब के। यह परिवार में भी व्याप्त है और समाज में भी। आखिर हमने अपनी विश्वसनीयता किस कारण से खो दी है? क्या हमें मंथन की ज़रूरत नहीं है अपने आचरण पर?

कविता के माध्यम से बहुत ही सुन्दर और कटु अनुभव से भरा प्रश्न उठाया गया है। यही कारण है कि एक कविता में वे अपनी अभिलाषा कुछ इस तरह व्यक्त करती हैं। :-

यादों की याद भुलाकर
चलो कहीं चलें दूर।..बहुत दूर
अतीत के दलदल से निकलकर
भविष्य की चिंता बिसराकर
वर्तमान को साथ लेकर
चलो कहीं चलें दूर।..बहुत दूर

ऐसा तो मन हम सभी का करता है और इन सब परेशानियों को नित झेलता है। अपने ही अस्तित्व को छिपाए हम कहीं झूठी हँसी हँसकर खुद को ही छलते हुए नजर आते हैं। वर्तमान को भूल, भविष्य का अनतुला बोझ सिर पे है और कमर से अतीत का रस्सा बंधा हुआ है। ऐसी ही रस्साकसी में अनमोल जीवन कौड़ियों के भाव हाथ की रेत सा फिसले जा रहा है।

समाज के प्रति अपनी घोर चिंता का प्रदर्शन करते हुए वे लिखती हैं कि :-

मेरे भारत में सपनों का
रामराज कब आयेगा
मेरा भारत महान का नारा
सत्य कब कहलायेगा

बहुत ही सार्थक प्रश्न उठाया है अपनी इस कविता में। वे सीधा इंगित करती हैं कि वर्तमान राजनीति से जनमानस की आशाएं मर रहीं हैं। यह देश के लिए अच्छा नहीं है क्योंकि जनता में व्याप्त आक्रोश का गुस्सा जब फूटेगा तो और विनाश को जन्म देगा। इन अत्याचारों, भुखमरी, हत्याओं और अपहरणों, बलात्कारों पर रोक लगाने की सख्त ज़रुरत है ताकि देश सिर्फ़ शब्दों में महान न रहे अपितु व्यवहार में भी महान हो।

जीवन की घटनाएं आदमी को सदैव कुछ सिखाकर जाती हैं फिर वह अच्छी हों या बुरी। अपनी एक कविता "जीत है या हार" में वह लिखती हैं कि :-

जीत है या हार इस को मत गिनो
क्या मिली है सीख इससे बस सुनो

हर हार जीत का नया मन्त्र देती है। मनुष्य घटनाओं से सीख लेता है और उस ज्ञान का उपयोग करता है। जीवन इसी तरह गढ़ा जाता है। कभी-कभी हम दिमाग का उपयोग ज़्यादा करते हैं और दिल का कम। यही कारण है कि जीवन में भौतिक चीजों के लिए आकर्षण अधिक है और हम उन ख़्वाहिशों की कुल्हाड़ियों से ख़ुद के पैरों पर वार कर जीवन को दुःख का भण्डार बना रहे हैं। वे सन्देश भी देती हैं कि वही चुनो जो मन कहे कि ठीक है फिर जीत और हार को मत गिनो। जीतकर भी कई बार हार का अहसास बना रहता है और कभी-कभी हारकर भी जीत का आनंद मिलता है। यह सब हमारी सोच पर निर्भर करता है कि हम जीवन की घटनाओं को कैसे लेते हैं।

यहाँ मैं भावुक् कर देने वाली रचना का जिक्र कर देना बहुत ज़रुरी समझता हूँ क्योंकि यह न सिर्फ़ उनकी पीड़ा है बल्कि इस दौर से हम कभी न कभी अवश्य गुज़रते हैं और उनका ही अनुसरण भी करते हैं।

अश्रुओं से चित्र यह तेरा बनाया आज मैंने
रुदन से भर प्रीत का यह गीत गाया आज मैंने
चक्षुओं के पात्र में घोले अनेकों रंग मैंने
ले पलक की तूलिका उनको सजाया आज मैंने

गहन वेदना और अकेलापन इन पंक्तियों में महसूस किया जा सकता है। क्या प्रेम में, लगाव में, स्मरण में रोने की ऐसी परिभाषा अद्भुत नहीं है! जबकि हम सब इसी प्रक्रिया से होकर गुज़रते हैं जीवन में। मगर कवि हृदय उसको भी शब्द देता है तो सुन्दरता से देता है। रुदन भी प्रेमोत्सव है अपने प्रिय की याद में।

इस पुस्तक की बोधगम्यता, सरल भाषा और भावों का सम्प्रेषण ही इसको पठनीय बनाता है। काव्य कला, छंद आदि का उपयोग यह सब उस समय इतने महत्वपूर्ण नहीं रह जाते जब पाठक भी सरल और सुगम संवाद की चाह रखता हो। वस्तुतः किसी भी रचना की तुलना मात्र शब्दों के चयन,

छंद विधान और उसके उलझन भरे तरीके से करने से बेहतर है कि आनंद को अनुभूत कराने वाले शब्दों को और सही, सरल चिंतन को हम मान दें। कोई भी समीक्षा स्थूल गुणधर्मों के आधार पर तब तक अधूरी है जब तक कि व्यक्त भाव को वह स्वीकार नहीं करती। जीवन के लगभग पिचहत्तर बसंतों के बाद फलीभूत हुआ यह काव्य फल सम्मान के क़ाबिल है। इसमें बहुत सी निजी रचनाएँ जो उनके जीवन से उपजी है लेकिन फिर भी वे समाज की थाती हैं।

आप सभी के समक्ष बिमला रावर सक्सेना जी का यह प्रयास प्रस्तुत है। मेरी अशेष शुभकामनाओं और आशीष की कामना के साथ वे सदैव स्वस्थ, सक्रिय, सतत चिन्तनरत और सृजन में तल्लीन रहें ताकि हम पाठक उनकी रचनाओं का निरंतर आस्वादन करते रहे आशा करता हूँ कि बड़ी बहिन श्रद्धेय बिमला रावर सक्सेना जी को आप सभी का प्यार मिलेगा।

केदार नाथ 'शब्द मसीहा'
(कवि एवं लेखक)
मुख्य डिपो सामग्री अधीक्षक
रेडिका, कपूरथला, नई दिल्ली
ई-मेल:- kedarnath151967@gmail.com

अहसास के पन्नें

साहित्य, संगीत, कलाविहीनः,
साक्षात् पशु पुच्छ-विषाण विहीनः

अर्थात् जो मनुष्य साहित्य, संगीत और कला से रहित है, वह मनुष्य रूप में पूँछ व सींग न होते हुए भी पशु के समान है, ऐसा शास्त्रों में वर्णित है।

"साहित्य समाज का दर्पण है," हम बचपन से ही पढ़ते व सुनते चले आए हैं। इसके पीछे यही कारण है कि साहित्यकार वही लिखता है, जिसे वह समाज में घटित होते हुए देखता है। रचनाकार हृदय से अति सम्वेदनशील होता है और उसका यही गुण उसे लिखने के लिए प्रेरित करता है। जिस व्यक्ति के हृदय में पर पीड़ा देख कर हलचल नहीं होती, वह लेखक कदाचित् नहीं हो सकता। यह बात अलग है कि वह कौन सी विधा में अपनी बात को सशक्त ढंग से अपने पाठकों तक पहुँचाता है। कवि इस हेतु कविता, गीत, ग़ज़ल अथवा मुक्तक के माध्यम से अपने भाव प्रदर्शित करता है तो लेखक अपनी भावनाओं को जन मानस तक कहानी, उपन्यास, निबन्ध अथवा नाटक आदि के माध्यम से पहुँचाता है। परन्तु उद्देश्य सभी का एक ही है।

श्रीमती बिमला रावर सक्सेना जी से मेरी भेंट एक साहित्यिक कार्यक्रम के दौरान हुई। सौभाग्यवश मुझे उसी कार्यक्रम में उनकी रचनाएं सुनने का अवसर भी प्राप्त हुआ। रचनाएं सुनकर हृदय में एक चाहत ने सिर उठाया कि प्रकाशक, श्रीमती भावना एवं संजय 'शाफ़ी' जी से ले कर उनकी पुस्तक अवश्य पढ़ूंगा। मेरी यह चाहत इतनी शीघ्र पूर्ण हो जाएगी, इसकी कल्पना मैंने नहीं की थी। उनका मुझसे इस काव्य-संग्रह की भूमिका लिखवाने का आग्रह वास्तव में मेरे लिए सौभाग्य का कारण बना, क्योंकि इसी बहाने मुझे उनके काव्य से रूबरू होने का अवसर मिला। पांडुलिपि से गुज़रने के दौरान मुझे बहुत सुखद अनुभव हुआ और महसूस हुआ कि उनकी क़लम से ऐसे अनमोल मोती निकले हैं, जिनकी आभा सहज ही मन को प्रफुल्लित व तन को रोमान्चित कर जाती है। उनके इस काव्य संकलन में कहीं भक्ति का रंग बिखरा है तो कहीं उनकी लेखनी समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध आवाज़ बुलंद करती हुई दिखाई देती है, तो वहीं दूसरी ओर सिद्धांतविहीन

होती राजनीति भी उनकी क़लम की चिन्ता बनी है। हम किस कदर अपनी जड़ों से कटते जा रहे हैं, पर भी करारी चोट करती उनकी रचनाएँ सीधी हृदय में उतर जाती हैं।

बिमला जी की रचनाओं की भाषा अत्यंत सरल, सहज व सजीव है। कविता वही है जिसे जन सामान्य समझ सके। इस सिद्धांत पर भी बिमला जी की सभी रचनाएँ खरी उतरती हैं।

उनका हृदय अपने सपनों के भारत की बाट जोहता हुआ पुकार उठता है :-

मेरे सपनों के भारत का,
राम राज कब आएगा,
मेरा भारत महान का नारा,
सत्य कब कहलाएगा।

इसी प्रकार उनकी एक रचना की कुछ पंक्तियाँ देखिये :-

जीत है या हार,
इसको मत गिनो,
क्या मिली है सीख इससे,
सब सुनो।

अथवा :-

लक्ष्य अभी दूर हैं,
कल्पनायें चूर हैं,

कहने का अभिप्राय यह है कि बिमला जी का पूरा ही संकलन अनेक रंगों से रंगा है और उन रंगों की विशेषता यह है कि हर रंग पहले वाले से चटक ही दिखता है। मैं माँ वागेश्वरी से यही प्रार्थना करता हूँ कि उनकी क़लम इसी प्रकार नित नये काव्य-मोती उगलती रहे और काव्य रस पिपासुओं की प्यास शांत होती रहे।

शुभकामनाओं सहित

एस.जी.एस. सिसोदिया 'निसार'
कवि, कहानी एवं उपन्यासकार
1654, टाइप-4, दिल्ली आवासीय परिसर,
गुलाबी बाग, दिल्ली-110007
मोबाइल :- 9868917588

दो शब्द मेरी ओर से...

मैं संक्षेप में अपनी पुस्तक और अपने लेखन के विषय में कुछ लिख रही हूँ क्या लिखा, कैसा लिखा, कैसा लगा हृदय के तार छू सका या नहीं- इसका निर्णय तो प्रिय पाठकगण आप ही करेंगे। हाँ, इतना अवश्य कहना चाहती हूँ कि मैं कला को केवल कला के लिए नहीं अपितु जीवन के साथ जोड़कर उसको उपयोगिता के साथ जोड़ना चाहती हूँ। जीवन में जो कुछ अपूर्ण रह जाता है, जो हम कह नहीं पाते न सह पाते हैं, उन भावनाओं, संवेदनाओं, अनुभूतियों को हम अपनी क़लम द्वारा शब्दों में प्रकट करके एक शांति संदेश देना चाहते हैं क्योंकि कला में इतनी शक्ति है कि वह सुंदर वस्तु में जीवन का संचार करती है और भीषण को निर्जीव बना देती है। एक कवि की कविता में मात्र अपना नहीं अपितु प्रत्येक व्यक्ति का, सृष्टि के जन जन का, प्रकृति के कण-कण का, सुख-दुख प्रदर्शित होता है। रिश्तो और समाज से जुड़ी खुशी कष्ट, पीड़ा, अंतर को झकझोरती कविताओं में भी मेरा प्रयत्न रहता है कि मैं उन समस्याओं के हल ढूंढने का प्रयास भी करूँ, केवल दुखों का संदेश ही नहीं अपितु निराशा में आशा की एक किरण भी छुपी हो। मेरे संकलन में मेरी पिछले छः दशकों से लिखी गई अलमारियों के कोनों से निकाली कविताओं का सम्मिश्रण है, जो मैं आपको समर्पित कर रही हूँ।

मैं अपने प्रिय कवि मित्र, बंधु, पग-पग पर मुझे सहयोग और पथ प्रदर्शन देने वाले केदारनाथ 'शब्दमसीहा' की पल-पल आभारी रहती हूँ। धन्यवाद उनके लिए बहुत छोटा शब्द है, उन्हें अपनी दीदी माँ का आशीर्वाद।

के.बी.एस प्रकाशन दिल्ली के प्रकाशक श्री संजय 'शाफ़ी' जी और श्री प्रिय भावना को उनके सहयोग एवं परिश्रम के लिए हार्दिक धन्यवाद देती हूँ

बिमला रावर सक्सेना

वी-45, न्यू कृष्णा पार्क, धौली प्याऊ,
नई दिल्ली-110018 दूरभाषः- 011-25533921

अनुक्रमांक

मेरी विनय	17	40	अंगरक्षक गुलाब के
भारत का ध्वज लहरायेगा	18	41	हमने ज़िंदगी से कहा दिया
अम्बर से धरती पर आकर	19	42	शक का बीज
दलदली रिश्ते	20	43	आग्रह
सच और झूठ का रंग	21	44	इच्छा शक्ति
चलो कहीं चलें	22	45	प्रकृति सुन्दरी
अँधेरे घिरे हैं बरसों से	23	46	न भूलो
प्रीत मेरी गीत तेरा	24	47	अटल सत्य
रामराज कब आयेगा	25	49	मेरे अहसास
मेरी कविता	26	50	वक़्त खो जाता है
जीत है या हार	27	51	सखि क्या कहूँ
फ़साने जिंदगी के	28	52	सच के काँटे
अभी लक्ष्य दूर हैं	29	53	वास्तविक मूरत
चित्र	30	54	एक सन्तुलन
आम लोग खास लोग	31	55	खुली आँखों में बंद सपने
मेरी किस्मत	32	56	दोहे–कुण्डली
चंद शेर	33	57	बहुत दूर मंज़िल
पलछिन से भरा अमृतपाठ	34	58	अपने हिस्से का आसमान
चलती रही ज़िन्दगी	35	60	कैसी विडम्बना है
कैसी कशमकश	36	61	दिल तो दिल है
सबकी अपनी अलग जंग है	37	62	बुन ले कुछ सपने
गायें सावन के गाने	38	63	गुलदस्ते के गुल
है कहाँ का न्याय	39	64	यह जीवन भी

जहाँ रुक कर	65	90	समय अलबेला है
काँटों के बीच फूल भी	66	91	नज़र न लग जाये
बावरा मन क्या करे	67	92	फिलहाल
वक्त ने मुझे वक्त दिया	68	93	गुनगुनी धूप सी यादें
अपनी खुशियाँ	69	94	कितना बड़ा लुटेरा
ग़म की सरगम पर	70	95	उज्ज्वल भविय
जूझती रहेगी ज़िन्दगी	71	96	कोई बता दे
मोह	72	97	हताशा
फूल और काँटे	73	98	हृदय का जल आँख तक
कुछ विचार	74	99	इस बरस
सूनी आँखों के सपने	75	100	सामने बैठे रहो
ज़िन्दगी में	76	101	तुम बदल गये
उदास झुर्रियाँ	77	102	फरिश्ते
सड़क पर भागते सपने	78	103	न याद करूँ
हालातों का मिजाज़	79	104	भाव और क़लम
सफ़र जारी रहेगा	80	105	कोई पथ दर्शक आ जाये
कुछ हमने कहा	81	106	तासीर है ये इनकी
धर्म से मुलाकात	82	107	मेरी विकलता
गिरा एक पत्ता	83	108	नये वस्त्र
जो सहारा बने	84	109	दोहे
लम्बे इन्तज़ार	85	110	उलझन के लच्छे
कल्पना के पंख पर	86	111	खुशियाँ मीत की
साँवला सागर	87	112	कितने अकेले
यादों के ख़जाने लुट गए	88	113	एक हँसी झूठी
तरंग के तराने	89	114	भीषण अंगार

ऐसा वैज्ञानिक 115
सागर की सीख 116
ज़िन्दगी की शाम 117
कितने पड़ाव आते 118
रिश्तों की धुंधली तसवीरें 119
आओ मिल के दो घड़ी 120
हर रिश्ता काई सा फट जाये 121
जिसको दिखाते अपने ग़म 122
यह तो ज़िन्दगी नहीं 123
ज़र्द पत्तों का दर्द 124
भागो गर्मी 125
उसके सपने और सबके सामने 126
दिल भुला दे वो ज़माने 128
एक मंज़िल और 129
फ़ैसला आपके हाथ है 130
कुछ अनकही कुछ अनसुनी 131
दिल की जगह 132
जाने दिल वाला–तुक्तक 133
भूल जाओ क्या हुआ 135
सर्द रिश्ते कैसे निभ पायें 136
मुख से निकलती आग 137
सफेद मुखौटा 138
कौन सी किताब थी 139
दिन में कहानी 140
तिक्किया 141
वर्तमान के घेरों में 142
ये दो आँखें 144

मेरी विनय

प्रभु इतनी विनय सुनो मेरी
मन में न दरारें आ जायें
मानव हैं हम मानव के प्रति
मन में न फ़ासले आ जायें

हे नाथ सुनो विनती मेरी
सबके प्रति प्रेम भाव रखना
मेरे मन में अपनों के लिए
न कभी दूरियाँ आ जायें

इतनी सुबुद्धि मुझको देना
हर मानव में तुमको देखूँ
तेरी बनाई हर मूरत में
बस मुझको तू ही नज़र आये

सद्भाव हो मन में सबके लिये
सीधी राहों पर चलूँ सदा
हो भूल से भी ग़लती कोई
तू राह दिखाने आ जाये

हे नाथ यही विनती तुमसे
कर्त्तव्य मार्ग पर चलूँ सदा
मेरे उजले पथ पर प्रभुवर
कोई काँटे न आ जायें

❄❄❄

भारत का ध्वज लहरायेगा

मेरे भारत देश तुझे शत-शत प्रणाम मेरा
आनन्द भरे मन में जब-जब लूँ नाम तेरा
तेरे पर्वतों का माथा ऊँचा रहे गगन तक
तेरे सागरों का जल भी गहरा रहे अतल तक
नदियाँ तेरी अनोखीं पालें जो देश सारा
ब्रह्मपुत्र, गंगा, यमुना अमृत-सा जल है सारा
नहरों, तालाबों, कुँओं का जो जाल सा बिछा है
उसने हमारे खेतों को प्यार से सींचा है
खेतों में चल रहे हैं ट्रैक्टर और हल ये सारे
मेरी धरती सोना उगले गा-गा कृषक पुकारे
वर्षा का अमृत जैसा जल सारी धरती को सरसाता
रिमझिम-रिमझिम बरस-बरस कर कुओं तालाबों को भर जाता
भिन्न-भिन्न जातियाँ यहाँ हैं भिन्न-भिन्न भाषायें बोलें
अपने-अपने धर्म निभाते पर जय भारत मिलकर बोलें
देश में चाहे कहीं रहें पर अपनी एकता कभी न छोड़ें
देश पे विपदा आते ही सब एक साथ रक्षा को दौड़ें
देशप्रेम के ऐसे उदाहरण
बस अपने भारत में मिलेंगे
भारत का ध्वज लहरायेगा
जब तक सूरज चाँद रहेंगे

❋❋❋

अम्बर से धरती पर आकर

युगों-युगों से आती वर्षा
अम्बर से धरती पर आकर
उन दोनों को मिलाती वर्षा
पर कुछ प्रश्न हृदय में आते
जिनके उत्तर बतला दो तुम
वर्ष हज़ारों बीत रहे हैं
किसे ढूँढने आती हो तुम

सागर की हर बूँद से मिलतीं
धरती के कण-कण से मिलतीं
घास के हर तिनके से मिलतीं
पेड़ के हर पत्ते से मिलतीं
फल-फूलों को भी छूती हो
बाँस और काँटे छूती हो
कोई न जाने क्या चाहो तुम
किसे ढूँढने आती हो तुम

कभी प्रेम से रिमझिम बरसो
कभी प्यार से छम-छम बरसो
कभी उलटतीं घड़ों के जैसी
कभी गरजतीं शेरों जैसी
कभी फाड़ देती हो बादल
फाड़ डालती हो क्या आँचल
हम क्या करें बताओ हमें तुम
किसे ढूँढने आती हो तुम

❋❋❋

दलदली रिश्ते

हमें बनाने वाला बड़ा मसखरा है
जो कुछ हमारे साथ होता है
सब उसी का किया धरा है
पहले हमें इस जग जंजाल में लाया
फिर हमारी नन्ही-सी जान को
रिश्तों के दलदल में फँसाया
ये रिश्ते भी अजब होते हैं
इनके दिये सुख-दुख के
ज़ख़्म भी बड़े ग़ज़ब होते हैं
ये रिश्ते सदा संग-संग चलते हैं
हम जहाँ भी जायें
ये हमको प्यार से छलते हैं
कभी इनके मारे पत्थर भी फूल लगते हैं
वक़्त बदलते ही अपनों के मारे फूल भी
पत्थर लगते हैं
इन रिश्तों को कोई न जान सका
इस नस्ल को आज तक कोई न पहचान सका
रिश्तों के दल का दलदल है बड़ा दलदली
इनको दूर भेजने के लिये नहीं है कोई पतली गली
इस दलदली दलदल में रहना भी मुश्किल
इनसे निकलना भी नामुमकिन
ऊपर वाला अपनी कठपुतलियों को
देख-देख कर मुस्कुरा रहा है
सचमुच कितना सरफ़िरा है
हमें बनाने वाला बड़ा मसखरा है।

❋❋❋

सच और झूठ का रंग

ज़िंदगी क्या है
काला सच या सफ़ेद झूठ
कट जाती है पूरी ज़िंदगी
यही जानने में
बोलने वाले की
नीयत पहचानने में
फिर भी नहीं अलग कर पाते
सच और झूठ का रंग
चलती रहती है ज़िंदगी भर
दोनों की जंग
कभी झूठ की तलाश में
सच सामने आता है
कभी सच की आड़ लिये
झूठ मिल जाता है
दोनों का काम है
करना मोह भंग
जीवन भर दोनों
चलते रहते हैं संग-संग।

❄❄❄

चलो कहीं चलें

यादों की यादें भुला कर
चलो कहीं चलें दूर बहुत दूर
अतीत के दलदल से निकल कर
भविष्य की चिन्ता बिसर कर
वर्तमान को साथ ले कर
चलो कहीं चलें दूर बहुत दूर
दिल कुछ और कहता है
दिमाग़ कहीं और जाता है
भुला कर सारी राहें
एक नई राह पर
चलो कहीं चलें दूर बहुत दूर
यादों में डूबे रहे तो
ज़िंदगी की नाव डूब जायेगी
लहरों में भटकते रहे
तो साहिल की लहर रूठ जायेगी
अपनी जीवन नैया की पतवार
दृढ़ता से थाम कर
चलो कहीं चलें
दूर बहुत दूर-बहुत दूर

❄❄❄

अँधेरे घिरे हैं बरसों से

क्यों सूख गए मेरी आँखों के आँसू बरसों से
क्यों रूठ गए मेरे मन के अहसास बरसों से
ये कैसा ख़ालीपन पसरा मेरे मन के अन्दर साथी
न कोई ग़म न कोई ख़ुशी न कोई शिकायत बरसों से
अपने को भूल रहा है दिल, यादों में अब तो कुछ भी नहीं
आईना भी भूल गया है मेरी शक़्ल बरसों से
न माज़ी में ही कुछ था न अब भी कुछ है बाक़ी
सिर्फ़ वीरानियाँ ही बस रहीं हैं यहाँ बरसों से
दूर के पास के रिश्तों में कुछ नहीं बाक़ी
अपने तो सपनों में भी नहीं नज़र आये बरसों से
मंज़िलों की कोई राह नज़र नहीं आती
हम तो राहें भटक गए हैं बरसों से
आँख और दिल में कोई नाता न रहा
न दिल ने सोचा कुछ न आँख रोई बरसों से
क्यों सूख गये मेरी आँखों के आँसू बरसों से

❋❋❋

प्रीत मेरी गीत तेरा

प्रीत मेरी गीत तेरा एक हो जायें अगर
तो राग का सुर ही बदल जाये सखे
गगनचुम्बी कल्पनाओं के महल ढह जायें चाहे
भावनाओं कामनाओं के दिये बुझ जायें चाहे
यह मधुर जीवन कटुक परिणाम में ढल जाये चाहे
सुख-दुख मेरे और तुम्हारे एक हो जायें अगर
तो दुख की परिभाषा बदल जाये सखे
सरस सुमधुर ये बहारें रूठ जायें चाहे बन्धु
ज़िंदगी के सब सहारे छूट चाहे जायें बन्धु
नदी में नौका किनारे पर डूब चाहे जाये बन्धु
रूह मेरी राग तेरा एक हो जायें अगर तो
ज़िंदगी की लय बदल जाये सखे
प्रीत मेरी गीत तेरा एक हो जायें अगर तो
राग का सुर ही बदल जाये सखे।

❄❄❄

रामराज कब आयेगा

मेरे भारत में सपनों का
रामराज कब आयेगा
'मेरा भारत महान' का नारा
सत्य कब कहलायेगा
दीन दुखी कमज़ोरों पर जब
कोई अत्याचार न होगा
हत्यायें अपहरण फिरौती
और कहीं व्यभिचार न होगा
न कोई अन्याय करेगा
और कोई लाचार न होगा
ऊँच-नीच का जात-पात का
भाषाओं का भेद न होगा
प्रेम प्यार से सभी रहेंगे
मनों में कोई छेद न होगा
स्वार्थ और लालच न होगा
आत्माओं का हनन न होगा
मानवता का त्याग न होगा
रिश्वत का बाज़ार न होगा
धर्म के नाम पर मरने मारने का
पागलपन जब मिट जायेगा
मेरा भारत महान का नारा
तभी सत्य बन जायेगा
मेरे भारत में सपनों का
रामराज तब आयेगा

❄❄❄

मेरी कविता

जी हाँ—मैं एक कवि हूँ
बहुत वर्षों से कविता लिखता हूँ
शक़्ल से भी कवि जैसा दिखता हूँ
पहले लोगों को ख़ुशी देतीं थी मेरी कवितायें
प्रेम, प्यार, शृंगार में डूबी होतीं थीं उनमें कथायें
लोग सुन-सुनकर झूमते थे झुक कर मेरी क़लम चूमते थे
लेकिन आजकल मेरी कविता को क्या हो गया है
लगता है मेरी क़लम का प्रेम प्यार खो गया है
आजकल मेरी कविता का रंग बदल गया है
मेरा कविता कहने का ढंग भी बदल गया है
या शायद मेरी कविता में जंग लग गया है।
मेरी कविता में शृंगार की जगह आग बरसती है
मैं क्या कहूँ, क्या करूँ कविता पढ़ते समय मेरी आवाज़ लरज़ती है
जब समाज में हर तरफ़ अन्याय अत्याचार है
दुर्व्यवहार, अनाचार, भ्रष्टाचार, व्यभिचार है
चोरी, लूट, हत्या; अपहरण का बोलबाला है
रिश्वतखोरी, गबन, तस्करी, फिरौती से इन्सान का मुँह काला है
कमाई का कितना आसान तरीका है
लालच और स्वार्थ से पेट भरने का कितना सलीक़ा है
कहीं अजन्मी बच्ची मार दी गई कहीं ज़िंदा बच्ची गाड़ दी गई
कोई अपनों पर घात करता है कोई देश से विश्वासघात करता है
ये सब बातें मेरी कविता को मेरे दिल और दिमाग़ को
मेरे अहसासों को मेरे जज़्बातों को
तोड़ मरोड़ कर याद दिलाती हैं कविवर नवीन जी की पंक्तियाँ -
''विप्लव गान'' कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ
जिससे उथल-पुथल मच जाये''
और मेरे मन की कुण्ठा मेरी कविता के रूप में
स्नेह शृंगार की जगह आग उगलने लगती है।

❋❋❋

जीत है या हार

जीत है या हार इसको मत गिनो
क्या मिली है सीख इससे, बस सुनो
हार जाये हार से जो हार वह ख़ुद को गया
तब विधाता भी कभी करता नहीं उस पर दया
जब मिला जीवन तो सब रंग अपना रंग दिखायेंगे
कभी सुख के कभी दुख के दिवस आयेंगे जायेंगे
सुख में अहं में मत आ जाना
दुख में कभी न तुम घबराना
पूरा करना वह सब अच्छा
जो है तुमने मन में ठाना
जब अच्छी होती है भावना पूरी होती सभी कामना
बुद्धिमान सब यही हैं कहते बात सदा उनकी ही मानना
जीवन तो बगिया है जिसमें
हरियाली तुमको है भरनी
दूर हटा कर सब अँधियारे
दीवाली तुमको ही करनी
जीवन की राहों में तो दुख आते आतीं बाधायें
अपने और पराये भी यदि कभी रुलायें कभी सतायें
इन सबसे तुम न डर जाना
जो करना है करते जाना
काँटे झाड़ हटाते जाना
तुम मंज़िल तक बढ़ते जाना
जो सही है बस वही मन की सुनो
जो कहे मन ठीक बस उसको चुनो
जीत है या हार इसको मत गिनो
क्या मिली है सीख इससे, बस सुनो

❄❄❄

फ़साने ज़िंदगी के

फ़साने ज़िंदगी के इतने ज़्यादा हैं
कि उम्र है थोड़ी उन्हें सुनाने को
कहानियाँ लिखी हैं इतनी लम्हे-लम्हे पर
कि कम पड़ेंगे काग़ज़ उन्हें छपाने को
हर एक रिश्ते में हैं उलझनें भरीं इतनी
हज़ारों साल लगेंगे उन्हें सुलझाने में
हमारे दर्द, रंजो ग़म का क्या कहना
न जाने कितने जनम लग जायेंगे भुलाने में
न जाने कैसी दुश्मनी उन्हें हमसे
कोई मौका न छोड़ें हमें रुलाने को
जुड़ती जाती है लम्हा-लम्हा कहानी एक नई
बीसों वो जोड़ते रहते हमें जलाने को
अपने दुख दर्द कैसे तुमसे कहें
उम्र है थोड़ी उन्हें सुनाने को
ज़िंदगी तो खुद एक फ़साना है
कभी ख़ुशियों का ख़जाना है
कभी ग़मों का बहाना है
ये ख़ुशी और ग़म के फ़साने
ये ज़िंदगी के हँसते-रोते तराने
इतने ज़्यादा हैं
कि उम्र है थोड़ी उन्हें सुनाने को

❄❄❄

लक्ष्य अभी दूर हैं

कल्पनायें चूर हैं
लक्ष्य अभी दूर हैं
रिक्त तन-मन
हृदय रीता
नियति कितनी क्रूर है
भटक कर भूली दिशा हूँ
मैं अमावस की निशा हूँ
न सवेरा इस निशा का
बस अँधेरा ही अँधेरा
न ज़मीं न आस्माँ का
कुछ पता न लक्ष्य मेरा
लक्ष्यहीन भटक रही
हर पग पर अटक रही
न बचे अरमान
न रहे सपने
अब कहीं कोई
दूर तक न अपने
वेदना, संवेदना, अहसास
चकनाचूर हैं
भावनायें, कामनायें
हृदय की नासूर हैं
कल्पनायें चूर हैं
लक्ष्य अभी दूर हैं

❋❋❋

चित्र

अश्रुओं से चित्र यह तेरा बनाया आज मैंने
रुदन से भर प्रीत का यह गीत गाया आज मैंने
चक्षुओं के पात्र में घोले अनेक रंग मैंने
ले पलक की तूलिका उनको सजाया आज मैंने
शून्यता न घेर ले सन्तप्त और टूटे हृदय को
एक मिथ्या आसरा ले दुःख भुलाया आज मैंने
मीत मेरे प्रीत के ये रंग तेरे ही लिये हैं
ले हृदय का रक्त रंगों को सजाया आज मैंने
चित्र की ये विचित्रता मैंने बुलाया आज तुझको
चित्र से बातें करीं, ख़ुद को रिझाया आज मैंने
अश्रुओं के रंग बन्धु होते हैं अद्‌भुत अनोखे
अश्रुओं के रंग से मिश्रित जो यह नव गीत गाया आज मैंने
रूदन से भर प्रीत का यह गीत गाया आज मैंने
अश्रुओं से चित्र यह तेरा बनाया आज मैंने

❊❊❊

आम लोग ख़ास लोग

जनतंत्र में होता है
जनता का राज, जनता के लिये, जनता के द्वारा
प्रकट में यही होता है नारा, जनतंत्र का ख़ास नारा
लेकिन इस तंत्र में होता है एक पर्दा
पर्दे पर प्रारम्भ से ही होता है ग़र्दा
पर्दे और पर्दे पर छाई गर्द के पीछे
एक तरह के नहीं दो तरह के लोग होते हैं
कुछ आम लोग कुछ ख़ास लोग
पहले सब आम लोग होते हैं फिर आम लोग कुछ लोगों को
ख़ास लोग बना देते हैं अपने कीमती वोट दे कर
ऊँची कुर्सी पर बैठा देते हैं ख़ास लोगों को अमीर
और ख़ुद को यानि आम आदमी को ग़रीब और
नीचा बना लेते हैं उनके ऊँचे महलों के नीचे
अपने झोंपड़े बना लेते हैं
फिर ख़ास लोग कुर्सी पर चिपक जाते हैं
ए.सी. कोठियों और गाड़ियों में बैठ कर
उनके दिल-दिमाग़ बर्फ़ से जम जाते हैं।
फिर वो न जाने क्या करते हैं उनको बुलेट प्रूफ़ गाड़ियों
बंदूकधारी रक्षकों की ज़रूरत पड़ने लगती है
बेचारों को हर समय प्राणों की चिन्ता रहती है
बेचारे ख़ास आदमियों की जान क्या-क्या सितम सहती है
जबकि आम आदमी चोर, डकैत, अत्याचारियों के बीच
बेधड़क सिर उठा कर घूमता है, मरता भी है।
अपने हिस्से के पुलिसवाले उनकी रक्षा के लिए देकर
आम आदमी अपने प्राण ख़ास आदमी पर न्यौछावर करता है
मैं तो मूर्ख हूँ मुझे ज़रा समझा कर बताओ
क्या जनतन्त्र ऐसा ही होता है?

❄❄❄

मेरी किस्मत

देने वाले के ख़ज़ाने में
कमी कोई नहीं
जो कमी लेने में है
वो तो मेरी किस्मत में है
वो तो ख़ुशियाँ बाँटता फिरता है
सारे जहान में
मेरे दामन में न आई
वो मेरी किस्मत में है
हादसे होते रहे हैं
जब से दुनिया है बनी
मेरे ग़म की रात की
सुबह न आई
वो मेरी किस्मत में है
वो हमेशा है लुटाता
दुनिया पे रहमो करम
हम किसी क़ाबिल नहीं थे
ये मेरी किस्मत में है

लूट कर सब कुछ
ज़माना ले गया
देने वाला भी सभी कुछ
दे गया
हम न ले पाये कभी कुछ
ये मेरी किस्मत में है

❊❊❊

चंद शेर

कभी झिड़कियाँ हमें दीं, कभी प्यार से पुकारा।
तुमने कदम-कदम पर, हमको दिया सहारा।

मेरी दुखती रग पे तुमने, मरहम जो आ लगाया।
देखा ख़ुदा में तुमको, तुममें ख़ुदा को पाया।

इस क़दर ऊँचा चढ़ाया, आस्मां पे जा चढ़ा।
और फिर नीचे गिरा, पहुँचा दिया पाताल में।

चंद थे अलफ़ाज़ जो तुमने किए थे इस्तेमाल।
भर दिये क्यों ख़ार मेरी ज़िंदगी की चाल में।

जब कभी भी ज़िंदगी में आ गईं तारीकियाँ।
याद तेरी आ के मुझको राह दिखलाने लगी।
हम तुम्हारी याद के दीपक जलाते हैं सदा,
ज़िंदगी की राह में कुछ रौशनी तो चाहिए।

कभी तुमने हमको था अपना बनाया,
निगाहों के रस्ते था दिल में बिठाया।
उसी इक नज़र का तुम्हें वास्ता है,
न ठोकर से मारो यूँ हमको ख़ुदाया।

चमन ज़िंदगी का यूँ वीरान करके,
बनाया कहाँ तुमने अब आशियाना
मेरे फूलों से दिल को काँटों से भरके,
अरे संगदिल क्यों लगाया निशाना।

गिन-गिन के घाव दिल पे, तुमने मेरे लगाए।
मरहम भी तुम लगाना, तुम्हें वास्ता किसी का।

❊❊❊

पलछिन से भरा अमृत घट

रोज़ एक वर्तमान अतीत बन जाता है
रोज़ एक आज कल बनने के लिये बीत जाता है
रोज़ पलछिन से भरा अमृत घट
हमारे हाथों से फिसल कर रीत जाता है
ज़िंदगी के कीमती लम्हों से भरे ख़ज़ाने का
एक कीमती हिस्सा आज़ाद हो कर जीत जाता है
इन्सान वक़्त की फ़ितरत से हैरान रह जाता है
सिर्फ़ एक आह भर कर इतना ही कह पाता है
काश वो एक पल
एक पल के लिए वापिस आ जाता
वक़्त भी हँस कर कहता है
गया वक़्त वापिस नहीं आता
दोस्त वो तो अतीत बन जाता है
रोज़ एक वर्तमान को अतीत बनाने से पहले
उस अमृत की एक-एक बूँद को बना लो अपना
क्योंकि—
हाथ से निकलने के बाद
हर बूँद बन जायेगी सपना

❄❄❄

चलती रही ज़िंदगी

चलती रही ज़िंदगी चलते रहे हम
आते रहे राहों में कभी ख़ुशियाँ कभी ग़म
कुछ अपने पराये हुये कुछ पराये हुये अपने
लोगों के मिजाज़ कभी रहे नरम, कभी रहे गरम
मिले कुछ ऐसे जो हैं लालच के मारे
स्वार्थ पूर्ति के लिये भूल गये शरम
कुछ देखे अन्यायी अत्याचारी
जो किसी पर भी ढा सकते हैं सितम

कुछ गर्व से कहते हैं वो ज़मीन की चार पैरों वाली चीज़ों में
चारपाई को छोड़कर सब कुछ खा सकते हैं
आसमान में उड़ान भरती चीज़ों में से
हवाईजहाज़, पतंग को छोड़ सब कुछ कर सकते हैं हज़म
भगवान के जीवों पर कुदरत के करिश्मों पर
करते नहीं ज़रा भी हमदर्दी तनिक सा करम

देखा जो सब तमाशा दुनिया लगने लगी धोखा
वचन लिया ख़ुद से नहीं ऐसा कुछ करेंगे हम
अपनी ख़ुशियों और ग़मों में डूबते उतराते
दिखने लगे हैं औरों की भी ख़ुशियाँ और ग़म
ज़िंदगी की राहों ने दिखाये हमको
अपने और सबके वक़्त कभी नरम कभी गरम
चलती रही ज़िंदगी चलते रहे हम

❄❄❄

कैसी कशमकश

कभी पाके तुझको खोया
कभी खो के तुझको पाया
तूने कदम-कदम पर
कितना हमें सताया
तेरा आना इक ख़ुशी थी तेरा जाना एक ग़म था
तू है हमारा कोई शायद ये इक भरम था
अपने ही हाथों हमने पग-पग पे धोखा खाया
सच्चाई ज़िंदगी की
हम तो समझ न पाये
जितना ही बचना चाहा
उतने फ़रेब खाये
क्यों कहर जब भी टूटा इक आसरा था झूठा
कोई न याद आया इक याद तू ही आया
तूने नहीं बुलाया हमने नहीं भुलाया
तूने न हमको समझा अब इसका ग़म नहीं है
हमने न ख़ुद को समझा इसकी शरम नहीं है।
हम सिर्फ़ आज हैराँ क्यों कर ये धोखा खाया
क्यों पा के तुझको खोया क्यों खो के तुझको पाया
ये कैसी कशमकश में हमने जनम गँवाया

❄❄❄

सबकी अपनी अलग जंग है

जीवन कितने रंग दिखाता
कभी रुलाता कभी हँसाता
क्षण में अम्बर पर चढ़ जाता
क्षण में लौट धरा पर आता

कभी सुनहरे सपने आते
कभी टूट जाते पल भर में
कभी सभी अपने बन जाते
कभी छोड़ जाते पल भर में

लगा मुखौटे तरह-तरह के
अपने सारे फ़र्ज़ निभाते
कुछ अतीत के वर्तमान के
और भविष्य के कर्ज़ चुकाते

जीवन तो होता इक मेला
जिसमें मानव जी भर खेला
कभी सभी कुछ लगे सुनहला
कभी भीड़ में लगे अकेला

जीवन का भी अलग तमाशा
कभी है आशा कभी निराशा
कभी तोड़ देता पल भर में
कभी नया जीवन भर जाता

ख़ुशियाँ आतीं ख़ुशियाँ जातीं
जीवन के क्या अजब ढंग हैं
संघर्षों में लगे हुए सब
सबकी अपनी अलग जंग है
सबका अपना रिश्ता नाता
जीवन कितने रंग दिखाता

❄❄❄

गायें सावन के गाने

बरस-बरस तू बरसे छम-छम
कभी छमाछम कभी झमाझम
कभी यहाँ पर कभी वहाँ पर
कभी कहीं पर कभी कहीं पर
अलग-अलग रूपों में बरसे
कभी फुहार बन जाता झिर-झिर
या नन्ही बूँदें बन बरसे
कभी मूसलाधार आँधियाँ, तूफ़ानी हवायें बन बरसे
मगर कभी तू क्यों डट जाता
एक जगह पर क्यों फट जाता
और बहा देता घर आँगन
तहस-नहस हो जाता कण-कण
मानव पशु बह जाते ऐसे बहें नदी में तिनके जैसे
रूप तेरा यह बड़ा भयंकर निर्दय क्यों बन जाते ऐसे
बरस-बरस तुम जम कर बरसो
रिमझिम-रिमझिम-रिमझिम बरसो
पर तुम इतना कभी न बरसो
जलथल बाढ़ बहा दे सबको
क्या तुम इतना नहीं समझते, सीमा में सब अच्छा लगता
सीमा से बढ़ कर जो होता
उससे तो सबका दिल दुखता
तुम्हें बुलायें बरस-बरस हम
प्यासी धरती को सरसाने
आओ बादल बरसो छम-छम
गायें हम सावन के गाने
ख़ुशी से आओ ख़ुशी से जाओ
बरस-बरस अमृत बरसाओ

❋❋❋

है कहाँ का न्याय ये

भर गये जो ज़ख़्म उनको हरा करने आ गये
कान में मेरे तराने दर्द के वो गा गये
ग़म की लहरें जब उठीं आ कर दिलासा दे गये
जिसको दुनिया देख ले ऐसा तमाशा दे गये
ज़िंदगी चलती रही हम भी तो ज़िंदा रह गये
ख़ुद पे हैराँ हो गये कैसे ये सब हम सह गये
इसपे भी जब मन न भरा सपनों में वो आने लगे
रात दिन बेचैन कर हमको सताने वो लगे
जो नज़ारे देखना चाहें न वो दिखला गये
ज़हर का प्याला पिला वो प्यार से सहला गये
ज़िंदगी में दर्द देने वाले तो मिलते रहे
ज़ख़्म वो देते रहे हम प्यार से सिलते रहे
सिलते-सिलते ज़ख़्म हाथ हमारे छलनी हो गये
दर्द जो दिल में छुपे थे और वज़नी हो गये
है कहाँ का न्याय ये कैसी दग़ा हम खा गये
भर गये जो ज़ख़्म उनको हरा करने आ गये

❋❋❋

अंगरक्षक गुलाब के

उस दिन गुलाब का मन बहुत दुखी था
क्यों भगवान ने मुझे इतना सुन्दर रूप देकर
मेरे आस पास लगा दिये काँटे
क्या मेरे लिये यही बचा था
जब भगवान ने भाग्य थे बाँटे
फिर अचानक एक दिन एक भक्त आया
प्यार से गुलाब को काँटों के बीच से तोड़ लिया
उसको भगवान के चरणों में चढ़ा दिया
गुलाब के मान को और भी बढ़ा दिया
भगवान के पास जा कर भी
प्रश्न मन में था अभी
प्रभु मुझे क्यों दिये काँटे
जब चैन से रहते हैं सभी
किन्तु प्रभु तो हैं ही दीनों के दयाल सबके संरक्षक
हँस कर बोले वत्स–
तू इतना सुन्दर है, ये हैं तेरे अंगरक्षक
तुम दोनों हो मित्रता के सूचक
दोनों हो भाग्यशाली एक दूसरे के पूरक

❊❊❊

हमने ज़िंदगी से कह दिया

कुछ हसीन पल हमने
जो चुरा लिये हैं ज़िंदगी से
उनके ही सहारे हम
बिता रहे हैं ज़िंदगी
भूल कर अपनी सारी ज़िंदगी को
अपनी सारी दास्ताँ
ज़िंदगी से छीन लेते हैं
रोज़ थोड़ी ज़िंदगी
छोड़ दिया सोचना
अतीत या भविष्य को
जी रहे हैं जैसे पल
दिखा रही है ज़िंदगी
रोज़ भूल कर रोज़ के पल
हमने ज़िंदगी से कह दिया
हमने वक़्त काटना भी
सीख लिया है ज़िंदगी
कुछ हसीन पल तुमसे चुरा लिये
कुछ तुमने सिखा दिया ज़िंदगी

❋❋❋

शक् का बीज

बन्धु मेरे शक् का बीज कभी न बोना मन में
बीज उगने से पहले ही उसकी जड़ें निकल आयेंगी
ज्यों-ज्यों बढ़ कर बड़ा होगा यह पेड़ मन में
प्यारे-प्यारे रिश्तों की जड़ें ही उखड़ जायेंगी
शक् की फ़सल बड़ी तेज़ी से बढ़ती है
बीज पड़ने के बाद बिना खाद पानी के भी
दिन दूनी रात चौगुनी चढ़ती है
कभी-कभी शक् का कीड़ा आगे बढ़ कर
एक से दूसरे तीसरे कान में भी पहुँच जाता है
कान से चलते-चलते दिल के अन्दर गड़कर
दिल और दिमाग़ के अन्दर तक घर कर जाता है
फिर फ़सल में फूटने लगते हैं बीज
भूल जाते हैं सब होली दिवाली और तीज
प्यारे अपनों को देखते ही
आग लगने लगती है तन बदन में
शक् के बीजों की खेती
आग लगाने लगती है घर के अमन में
तो बन्धु शक् का बीज कभी न बोना मन में
शक् को शान्ति से आपस में प्यार से सुलझा लेना
सुलझा कर उलझनें, अपनों को गले से लगा लेना

❄❄❄

आग्रह

आज प्रकृति के
सुन्दरतम उपवन की
सुन्दरतम एक कली ने
किया एक भोला सा आग्रह
लिखो आज कुछ मेरी
भोली मुसकानों पर
लिखो आज कुछ मेरी
मीठी मधु तानों पर
लिखो आज कुछ
मेरे स्नेह भरे अपनों पर
लिखो आज कुछ मेरे
जीवन के स्वर्णिम सपनों पर
हुआ स्नेह से गद्‌गद्‌
मेरा अन्तस्तल भी
बही प्रेम की नेह भरी
धारा निर्मल सी
भर सुगन्ध सृष्टि की सारी
अपने मन में कहा नेह से
तुम कलिका से
सुन्दर पुष्प बनो जीवन में
और भरो मीठी सुगन्ध से
सबका जीवन
जग का कण-कण
थिरक उठें सबके मन
सुन कर मीठी वाणी
साथ तुम्हारे हँसें
खिलखिलाये हर प्राणी

❋❋❋

इच्छा शक्ति

जितने दर्द हृदय में बढ़ते
उतना ही मैं हँसती जाती
जितने घाव हृदय में लगते
उतनी और विहँसती जाती

मेरी उज्ज्वल हँसी देख के
शरमा जाते फूल बाग़ के
नहीं चाहती कोई देखे
दर्द हृदय के दाग़ घाव के

बाँट नहीं लेगा कोई ग़म
अगर किसी को दिखलायेंगे
हँसी उड़ाने वाले अपने
जाने कितने मिल जायेंगे

मैं ऊपर से पत्थर दिखती
अन्दर भरा समन्दर गहरा
लगा लिया अपने अन्तर पर
दृढ़ इच्छा शक्ति का पहरा

भावनायें अपने अन्तर की
दिखलानी हैं नहीं किसी को
अन्तर्मन की व्यथा कथायें
नहीं सुनानीं मुझे किसी को

सिखा दिया है मुझे वक़्त ने
ढूँढ न झूठे संग सहारे
रोने में कोई साथ न देगा
हँसो, ज़माना संग तुम्हारे

❋❋❋

प्रकृति सुन्दरी

ऊपर विस्तृत नीला अम्बर
नीचे नीला सागर
झूम रही है प्रकृति सुन्दरी
ओढ़े नीली चादर
चाँद सितारे टँके हुए हैं
इस नीली चादर में
चमक रही जिसकी परछाईं
इस नीले सागर में
सप्त अश्व वाला रथ लेकर
आर्यमान भी आए
सतरंगी किरणों से आकर
सबके दिवस सजाए
विहँस रही है ऊषा सुन्दरी
सूर्य किरण से सजकर
सागर की लहरों पर नाची
मचली थिरक-थिरक कर
झिलमिल-झिलमिल अम्बर झलके
झिलमिल-झिलमिल सागर
नृत्य कर रही प्रकृति सुन्दरी
ओढ़े नीली चादर

❄❄❄

न भूलो

न रो, न सो, न खो
रोना ज़रूरी भी है
रोने से मन हल्का हो जायेगा
रोना बुरा भी है
रोने से तुम्हारा राज़
सबका हो जायेगा
अच्छा है अपना दर्द
अपने अन्दर ही रखो
तुम्हारा रोना सब देखेंगे
दर्द कोई नहीं बाँटेगा
सोना भी ज़रूरी है
ज़िंदगी के लिए
पर इतना मत सो जाओ
कि दीन दुनिया से दूर हो जाओ
जीने के लिये
आँखें खोलकर रहना ज़रूरी है
जी भर कर जागकर जियो
सोना तो जीने की मजबूरी है
कभी-कभी खोना भी ज़रूरी है
खो जाओ
कुदरत के नज़ारों में
धरती, सागर, सूरज, चाँद, सितारों में
वनों में, उपवनों में
घास-पात फूलों में
खो जाओ अम्बर के रंग में
पर न भूलो ज़िंदगी एक जंग है

❊❊❊

अटल सत्य

सुख और दुख
मानव जीवन के दो अटल सत्य
दोनों का चक्र ही है जीवन मानव का
दोनों के चक्र के बीच है बीतता
जीवन मानव का यूँ ही है चलता
सुख आता है
ख़ुशी होती है
दिन सुनहरा
और रात रुपहली होती है
पर इस सुख में
इतना न चिपक जाओ
कि जब यह
किसी दूसरी मंज़िल की तलाश में
तुम्हें छोड़ कर जाने लगे
तो तुम्हारे पंख
उस सुख में चिपक कर
अपनी जान गँवाने लगें
संभाल कर रखो अपने पंख
न चुभने दो इनमें
किसी भँवरे के डंक
सुख तो भँवरा है
आया
गाया
और चला गया

चूम लो उस जाते सुख को
सहेज लो मीठे सुख की यादें
बाँध लो उनको
आस की डोरी से
उनके सहारे सामना करो
आने वाले दुखों का
सुखों की जो डोरी तुम्हारे हाथ में है
एक बार फिर खींच कर लायेगी
सुख भरे दिन,
बजेगी ख़ुशियों की रुनझुन
और सुख-दुख का यह क्रम
यह अमृत और विष का चक्र
इसी तरह–
चलता रहेगा निरन्तर
दोनों हैं अमर्त्य
सुख और दुख
मानव जीवन के दो अटल सत्य

❄❄❄

मेरे अहसास

बड़ी अदा से हमारे जिगर पे वार किया
मेरे जुनूँ मेरे अहसास ही को मार दिया
जो साथ रहते थे हरदम मेरी निगाहों में
तराने गूँजे थे जिनके मेरी अदाओं में
बदल गए हैं मेरी ज़िंदगी गुनाहों में
तराने ढल गए हैं आहों में
मेरे सगों ने ही मुझमें ज़हर उतार दिया
मेरे जुनूँ मेरे अहसास ही को मार दिया
मेरे अहसास ही मेरा ख़ज़ाना थे
गूँजता दिल में वो तराना थे
मेरे दिन रात के फ़साने थे
मेरे जीने के वो बहाने थे
मेरे अपनों ने ही मंज़िल से यूँ उतार दिया
मेरे जुनूँ मेरे अहसास ही को मार दिया

❋❋❋

वक़्त खो जाता है

लोग नहीं खोते
वक़्त खो जाता है
शायद फिर कभी मिल जायें
बिछड़े हुए साथी
पर गया वक़्त
फिर कभी नहीं
मिल पाता है
ज़िंदगी की राहों में
न जाने
कौन
कब, कहाँ और कैसे
मिल जाये
या बिछड़ जाये
सब वक़्त की करामात है
एक बार जो क्षण
हाथ से निकल गये
मुट्ठियों में से फिसल गए
उन क्षणों में
जो निर्णय ले लिये
उनका देना पावना
उन्हीं क्षणों पर होगा
किंतु परिणाम
सदा के लिए होगा
सीख लो
वक़्त की अदावत से
बाँध लो वक़्त को
अक़्ल की डोरी से
वरना भाग जायेगा
चोरी से

❋❋❋

सखि क्या कहूँ

सखि क्या कहूँ
कैसे कहूँ
क्यों कर हृदय झंकृत हुआ
अनजान ब्रीड़ा से
तनिक विस्मित हुआ
जैसे किसी ठहरे सरोवर में
किसी ने फेक कर कंकर
मचा दी जल में इक हलचल
मगर यह क्यों हुआ
यह सोच कर पल भर
हृदय कुण्ठित हुआ
फिर एक छाया घिर गई
लेकर अतीत की याद को
मन में जो परिलक्षित हुआ
देखा जो उसको ध्यान से
मन एक बार मचल उठा
और झाँकने बाहर जो आया
आर्द्र नयनों को किया
टूटी डोरी जोड़ने की
भावना अद्‌भुत जगी
तोड़ी भूल में क्यों डोरी
यह सोच कर पागल हृदय लज्जित हुआ
सखि क्या कहूँ, कैसे कहूँ
क्यों कर हृदय सम्भ्रमित हुआ
सखि क्यों हृदय झंकृत हुआ
सखि क्यों तनिक विस्मित हुआ?

❊❊❊

सच के काँटे

काँटों में उलझे हुए सच
समय-समय पर
चुभते रहते हैं
कभी दिमाग़ में
कभी दिल में
और इन्सान उन्हें निकालने की धुन में
उनमें ही उलझता जाता है
अपनी ही आत्मा नकारती है ख़ुद को
अपना हृदय स्वीकारता है
काँटों में छुपे उस सच को
लेकिन उसका अहं
मखमली झूठ के भुलावों में भूल कर
झूठे भुलावों में डूबकर
कोशिश करता है सच को झुठलाने की
और नींव डाल लेता है
ख़ुद को काँटों में उलझाने की

❋❋❋

वास्तविक मूरत

कभी ख़्वाबों में
कभी ख़यालों में
ज़िंदगी के कुछ सच
झाँकने आ जाते हैं
जो हँसाते हैं
रुलाते हैं
सताते हैं जलाते हैं
साथ ही हमें दिखाते हैं वो आईना
जिसमें हमने अपनी सच्ची मूरत को
कभी देखना नहीं चाहा
अपनी कसौटियों पर परखे सच
आज झूठ क्यों लगने लगे हैं
क्यों चाहा लगने लगा अनचाहा
काश पहले मिल जाता यह दर्पण
तो हम न करते झूठे सच को समर्पण
मानव के जीवन में एक बार
वह क्षण अवश्य आता है
जब वह आईने में
अपनी वास्तविक मूरत परखना चाहता है
सच की कसौटी पर ख़रा उतरना चाहता है
यही आत्म-मंथन
मानव को मानव बनाता है
मानवता को जीवित रखता है

❋❋❋

एक सन्तुलन

क्यों कभी-कभी कोई इन्सान
यादों को याद रखने में
यादों को भुलाने में
यादों को सजाने में
मिटा देता है ख़ुद की हस्ती
फिर भी—क्या पीछा छोड़ती हैं यादें
जितना छोड़ो उतना पीछा करते हैं
किये हुए वादे
ठुकराये वादे
भुलाये वादे
कसमों के जाल
जिन्हें भुलाने की कोशिश में
और उलझता जाता है इन्सान
वो अपने जिन्हें छोड़ दिया
वो कसमें जिन्हें तोड़ दिया
दूर करके अपनों को
अपना लिया अकेलेपन को
यादों के जंगल की भूल भुलैया में
भुलाने को यादें भुला दिया ख़ुद को
यादें तो न गईं चली गई मस्ती
इस तरह ख़ुद ही अपने हाथों से
उस इन्सान ने मिटा दी अपनी हस्ती
काश उसने ख़ुद पर नियन्त्रण रखा होता
भूत भविष्यत् वर्तमान में
एक सन्तुलन रखा होता।

❋❋❋

खुली आँखों में बंद सपने

खुली आँखों में बंद सपनों को
पूरा करने में कट जाती है ज़िंदगी
बंद आँखों के सपनों को ढूँढने में
भटक जाती है ज़िंदगी
विडम्बना है जीवन की
बहुत से सपने
अतीत की गहराइयों में दब जाते हैं
बहुत से जीवन की सच्चाईयों से डर जाते हैं
कुछ अधूरे सपने रात के सपनों में आ-आकर
तरसाते हैं तड़पाते हैं
कुछ आशाओं में उलझे सपने
खुली आँखों में किसी पल रौशनी—
किसी पल अँधेरा भर जाते हैं
इन्सान कोशिश करता रहता है
सपनों को आकार देने की
सपनों को साकार करने की
नदी के दो पाटों की तरह
स्वप्न और सत्य में बँट जाती है ज़िंदगी
खुली आँखों के बंद सपनों में
अटक कर भटक कर
या उम्र में से निकल कर
कट जाती है ज़िंदगी

❄❄❄

दोहे–कुण्डली

गीता में प्रभु ने कहा न सहना अन्याय
इससे पहले जान लो न करना अन्याय ॥1॥

जो करता अन्याय है वह जन पापी होये
जो सहता अन्याय है वह भी पापी होये ॥2॥

बुद्धि दई भगवान ने कर ले सही प्रयोग
बाद में फिर पछतायेगा और भोगेगा भोग ॥3॥

कितनी बातें करो पर बोल तोल के बोल
बोल तोल के जो कहे देता अमृत घोल
देता अमृत घोल सभी बन जाते अपने
सही बात जो करे हों उसके पूरे सपने ॥4॥

काँधे तेरे इक तरफ़ बैठे हैं भगवान
दूजे काँधे पर तेरे बैठा है शैतान
दोनों की तू बात सुन सही बात को मान
अपनी बुद्धि का सही करना इस्तेमाल
सही बात को मान सही निर्णय ले लेना
साथ तेरे भगवान ग़लत का साथ न देना ॥5॥

बड़ी कठिन जीवन डगर, पग-पग पर संघर्ष
पग-पग पर बाधायें हैं, कदम-कदम अपकर्ष

कदम-कदम अपकर्ष मगर न इससे डरना
सारे उतार-चढ़ाव बन्धु तुम जीतते रहना

गिरना कभी न निज दृष्टि में
शक्ति, स्वाभिमान ही बड़े सृष्टि में ॥6॥

❄❄❄

बहुत दूर मंज़िल

थके पाँव लेकिन बहुत दूर मंज़िल
न जाने कहाँ खो गया मेरा साहिल
मुझे पार करने हैं कितने पड़ाव
मेरी मंज़िलों को है क्यों मुझसे दुराव
हर राह दे जाती है न जाने कितने घाव
न जाने कहाँ ले जायेंगे मुझे दरिया के बहाव
ये दिल के फ़फ़ोले कभी टूटते हैं जब
उम्मीदों के दामन कभी छूटते हैं जब
लगे कोई सुन ले मेरा हाले दिल तब
सिलसिले ये ख़त्म होंगे न जाने कब

दर्द दिल के दे रहे तनहाईयाँ,
हर कदम पर मिल रहीं रुसवाइयाँ
इन चाँद और सितारों से कह कर कहानियाँ
बढ़ा लेते और अपने दिल की वीरानियाँ
कदम साथ न दें, न दे साथ ये दिल
थके पाँव लेकिन बहुत दूर मंज़िल
ग़मों का ये दरिया भी है कितना बेदिल
न जाने कहाँ खो गया मेरा साहिल

❊❊❊

अपने हिस्से का आसमान

बचपन से ही
आकाश में उड़ती पतंगों को देख कर
दिल में कुछ प्रश्न उठा करते थे
ये पतंग कैसे उड़ती है
आकाश तक कैसे पहुँच जाती है
इतनी पतंगों के बीच
इतनी देर तक कैसे बची रहती है
कैसी हिम्मत से पेंचों में उलझ जाती है
कभी उलझती है कभी सुलझ जाती है
फिर कभी कैसे पलक की झपक में कट कर
कभी किसी पेड़ में अटक जाती है
कभी किसी छत के किसी कोने में भटक जाती है
कभी कूद कर किसी के हाथ में मटक जाती है
और फिर शान से आकाश में उड़ने पहुँच जाती है
आज उम्र के इस मोड़ पर आ कर
ख़ुद को ज़िंदगी भर ज़िंदगी की आग में तपा कर
मैं उड़ती पतंगों को देख कर
अपने प्रश्नों को–
बचपन के उन अनुत्तरित प्रश्नों को
ख़ुद ही हल कर लेती हूँ
मैं समझ गई हूँ कि हवाओं के रुख़ के साथ उड़ती
हर पतंग का अपना एक पथ होता है
हर पतंग का एक पथ प्रदर्शक होता है
हर पतंग कभी उलझती है कभी सुलझती है

हर पतंग अपनी शक्ति भर जूझती है
अपनी राह अपनी मंज़िल ढूँढ लेती है क्योंकि-
हर पतंग का अपना एक आसमान होता है
जो कभी दूर कभी पास होता है
हर पतंग को कहाँ तक जाना है
इसका उसे आभास होता है
हर पतंग सारी बाधाओं को पार करके
ढूँढ लेती है अपना आसमान
अपने हिस्से का आसमान
चाहे आ जायें उसकी राह में
कितने ही तूफ़ान
जहाँ ख़त्म हो जाता है
उसके हिस्से का आसमान
वहीं कट कर
अपनी डोर छोड़कर
नीचे गिर कर दे देती है जान

❄❄❄

कैसी विडम्बना है

ज़िंदगी का फ़लसफ़ा भी कितना अनोखा है
कभी ज़िंदगी एक सच है कभी धोखा है
ज़िंदगी भी कितनी अजीब है
इन्सान भी कितना अजीब है
ज़िंदगी उसे पल-पल सताती है
हर बीतते पल के साथ रीतती जाती है
ज़िंदगी भर ज़िंदगी मौत से डराती है
हर दुख से डर-डर कर आँसू बहाती है
दुखों के बीच भी जीना चाहे ज़िंदगी
चैन की मौत न मरना चाहे ज़िंदगी
ज़िंदगी भर तपती है कष्टों की आग में
लेती है तसल्ली कह कर यही था भाग में
फिर भी इन्सान ज़िंदगी से ही चिपकता है
कहीं छूट न जाये हाथ से कस कर पकड़ता है
कैसे विडम्बना है—
जो मौत सुकून की नींद सुलाती है
सारी ज़िंदगी के कष्ट दूर कर देती है
उस से ही इन्सान डरता रहता है
ज़िंदगी उसे डराती रहती है
दोनों का यह नाटक एक चक्र की भाँति
न जाने कब तक चलता रहता है
काश इस सत्य को कोई ढूँढ पाता
कैसा अनोखा है यह फ़लसफ़ा

❄❄❄

दिल तो दिल है

हमने उनको दे के दिल उनको ज़रा बहला दिया
ज़ख़्म छोटा सा ही था हमने उसे सहला दिया
कुछ दिनों को दिल दिया था आज वापिस ले लिया
हमने अपनी दोस्ती का फ़र्ज़ पूरा कर दिया
साथ दे जो मुश्किलों में दोस्त तो होता वही
इस कहावत को बनाया दे के दिल हमने सही
ज़ख़्म उनके भर गये तो दिल को वापिस ले लिया
दोस्तो तुम ही कहो क्या कुछ ग़लत हमने किया
कुछ भला करना तो होता फ़र्ज़ हर इन्सान का
हमने भी कुछ करके ऐसा दोस्ती का बदला दिया
दिल तो दिल है दोस्त तुम दिल को न यूँ इल्ज़ाम दो
सबका अपना-अपना दिल है जो किया वो जी लिया
अब बताओ दिल तो दिल है दिल ने की अपने दिल की
दिल को फिर क्यों ग़लत कह तुमने यूँ दहला दिया

❄❄❄

बुन ले कुछ सपने

कभी-कभी बावरा मन
हो उठता है उन्मन
कह उठता है ख़ुद से
बुन ले तू भी कुछ सपने
जो हों सिर्फ़ तेरे अपने
तेरा भी अपने पर है कुछ अधिकार
क्यों ख़ुद को नकारता है बार-बार
अतीत ने साथ नहीं दिया
तुझसे तेरा बहुत कुछ छीन लिया
फिर भी अभी तेरे पास वक़्त है
न तू लाचार न अशक्त है
सँवार ले अपने वर्तमान को
पुकार ले प्यार से भविष्य को
जो कुछ तूने करना चाहा था
पूरा कर ले उस लक्ष्य को
अरे बावरे
कुछ अपने मन की भी सुन ले
बुन ले तू भी कुछ सपने
जो हों सिर्फ़ तेरे अपने

❋❋❋

गुलदस्ते के गुल

क्यों एक गुलदस्ते में रहने वाले
बँट जाते हैं टुकड़ों में
गुच्छे का एक-एक गुल
गुम हो जाता है अपने-अपने दुखड़ों में
कच्चे हो जाते हैं रिश्तों के बन्धन
करें क्या, सबकी अपनी-अपनी ख़ुशी है
सबके अपने-अपने क्रन्दन
क्यों लोग हम से मैं हो जाते हैं
क्यों वक़्त की क्रूर ठोकरों से
उनके सारे अहसास सो जाते हैं
चाहिए कोई ऐसा
जो बदल दे 'मैं' को 'हम' में
बिखरे टुकड़ों को जोड़कर
बिखरे मनकों की माला बनाकर
जोड़ दें अपनों को अपनों में
फिर से खो जायें सब अपनों के सपनों में
गुलदस्ते के गुल फिर से महकने लगें
प्यार के पंछी प्यार से चहकने लगें

❋❋❋

यह जीवन भी

यह जीवन भी
एक अजब तमाशा है
कितने ढेर से रंग हैं इसमें
देखने के लिये
समझने के लिये
देखते-देखते कब बचपन जवान हो जाता है
जवानी कब बूढ़ी हो जाती है
पता ही नहीं चलता
बरस के बरस कब निकल जाते हैं
कब दिन बर्फ़ से पिघल जाते हैं
हाथों से रेत की तरह फिसल जाते हैं
कब सुख दुख के चक्कर
चेहरे पर सलवटों के रूप में
अपनी छाप छोड़ जाते हैं
कब अपने ही शरीर के अंग
धीरे-धीरे मुँह मोड़ जाते हैं
हाथों में लकीरें भी बदरंग हो जाती हैं
इन सारे रंगों को समझने के लिये
इन सारे ढंगों को परखने के लिये
सचमुच एक जीवन बहुत कम है

❋❋❋

जहाँ रुक कर

ज़िंदगी का
एक मोड़ ऐसा आता है
जहाँ रुक कर
इन्सान सोचने को विवश हो जाता है
स्वयं से एक प्रश्न पूछता है
ज़िंदगी क्या है
फिर उत्तर भी स्वयं ही देता है
शायद ख़ुद को धोखा देने का नाम ही
ज़िंदगी है
धोखा अपनों को अपना समझने का
धोखा अनचाही उलझनों में उलझने का
धोखा असन्तुलित प्रेम और फ़र्ज़ का
धोखा न जाने किस-किस कर्ज़ का
धोखा अतीत की यादों का
धोखा भविष्य के वादों का
धोखा वर्तमान को झुठलाने का
धोखा अहं पर इठलाने का
धोखा शूल को फूल समझने का
धोखा भंवर को कूल समझने का
कुछ किसमत पर छाई गर्द
कुछ विडम्बनायें और दर्द
सबको साथ लेकर
चलती रहती है ज़िंदगी
कैसे-कैसे मोड़ों से
गुज़रती रहती है ज़िंदगी

❄❄❄

काँटों के बीच फूल भी

हाथों की बंद मुट्ठियों में
टूटे सपनों की किरचें
कस कर दबाये घूमते हैं
कहीं किसी को दिख न जायें
कहीं भेद खुल न जायें
चाहे इस प्रयत्न में
हाथ लहूलुहान हो जायें
हथेलियों में
अपने रक्तिम स्वप्नों की
मेहँदी रचाये घूमते हैं
दिल की गहराइयों में
अनगिनत ज़ख़्मों को छुपाये
चुपके से अकेले में
उन पर मरहम लगाते हैं
उन्हें सिलते हैं
फिर भी जीवन रुक कर
ठहर नहीं जाता
दर्द और आहों के काँटों के बीच
फूल भी खिलते हैं
कुछ अपने दूर होते हैं
तो कुछ अपने मिलते भी हैं
सपने टूट कर जुड़ते भी हैं
भटके राही लक्ष्य की ओर
मुड़ते भी हैं

❋❋❋

बावरा मन क्या करे

बन्धु मेरे तुम कहो
तब बावरा मन क्या करे
जब न दिखे मीलों तलक कोई उजाला
जब कण्ठ से नीचे न जाये इक निवाला
तिमिर केवल तिमिर घन चहुँ ओर छाये
जब हृदय को सृष्टि में कुछ भी न भाये
एक सपना सा लगे अपना ये जीना
ज़िंदगी जीना लगे ज्यों ज़हर पीना
शून्य में भटका करे
तब बावरा मन क्या करे

प्रीत की यह रीत कैसी है विधाता
प्रेम का यह रोग कैसे दिन दिखाता
रात दिन खोले हुए हम द्वार बैठे
फिर भी आँगन में तो अब कोई न आता
दृष्टि भी धुँधला गई है आँख भी पथरा गई
कौन सी आई हवा दुनिया मेरी बिखरा गई
जाने अनजाने सभी हैं दूर भागे
किसमतों के ख़ुदा तुम फिर भी न जागे
भँवर में डूबे न हों कोई किनारे
बावरा मन क्या करे
तब बावरा मन क्या करे

❄❄❄

वक़्त ने मुझे वक़्त दिया

ज़िंदगी भर ज़िंदगी की उलझनों ने
काम कोई न करने दिया करीने का
आज एक युग के बाद
वक़्त ने मुझे वक़्त दिया है
वक़्त को अपनी मर्ज़ी से जीने का
गुज़रती रही ज़िंदगी
अपनों के फूल रूपी पत्थर खा-खाकर
हम भी आँसुओं को छुपाते रहे
दिल के अन्दर बहा-बहाकर
एक-एक आँसू एक-एक ज़ख़्म बनता रहा
एक-एक फूल रूपी शूल सीने को छलनी बनाता रहा
आस-पास न कोई दुआ थी न कोई दवा थी
मेरे चारों तरफ़ सिर्फ़ गरम हवा थी
शायद ज़िंदगी यूँ ही बीत जाती
कि अचानक एक अजनबी ने
एक नई राह दिखा कर
मक़सद दिया ज़िंदगी को जीने का
इस तरह मौका मिला मुझे
अपने सीने के ज़ख़्म सीने का
वक़्त ने मुझे वक़्त दिया
वक़्त को अपनी मर्ज़ी से जीने का

❊❊❊

अपनी ख़ुशियाँ

अपनी उम्मीद की डोर
कभी छूटने न देना
अपनी ख़ुशियाँ अपने को ही
लूटने न देना
बहुत बार कभी अपनों से
कभी परायों से
कभी किसमत से मिलती हैं ठोकरें
कुछ भी सूझता नहीं
क्या करें क्या न करें
सपने सो जाते हैं
रास्ते खो जाते हैं
तनहा-तनहा से
अकेले हम रह जाते हैं
ऐसे में उम्मीद की डोर को
छोड़ न देना
उम्मीद की डोर को
कस कर पकड़ लेना
एक दृढ़ संकल्प ले कर
अंदर के छालों को
कभी फूटने न देना
अपनी ख़ुशियाँ अपने को ही
लूटने न देना

❋❋❋

ग़म की सरगम पर

कोयल की धुन सुन सोच रही
मेरा मन क्यों इतना उदास
खग वृन्द गा रहे आस-पास
मैं क्यों उदास मैं क्यों उदास
ग़म की सरगम पर बजा रही
मैं अपनी साँसों का बाजा
सम की सरगम पर बजा नहीं
क्यों मेरी साँसों का बाजा
क्यों झूम रही सारी सृष्टि
लयबद्ध तान से भरी हुई
कैसे सुर थे तब बजे यहाँ
जब सारी सृष्टि हरी हुई
ये सूरज चाँद सितारे भी
हैं बँधे हुए किन धागों में
कैसे अनुशासन में रह कर
आते गाते किन रागों में
नदियाँ सागर झरने तालाब
वादी घाटी उपवन कानन
हर कली फूल को भँवरे भी
संगीत सुनाते गुनन-गुनन

फिर क्यों उदास है मेरा मन
रहता है सदा व्याकुल उन्मन
कोई संगीत तो हो ऐसा
जो मेरा मन भी हो ताज़ा
ग़म की सरगम पर बजा रही
मैं अपनी साँसों का बाजा

❊❊❊

जूझती रहेगी ज़िंदगी

क्यों हम समझते हैं भीड़ में अकेला ख़ुद को
कोई साथ हो न हो हम तो हैं साथ अपने
कोई हमें कितना ही सताये या दग़ा दे
साथ हमारा नहीं छोड़ेंगे हमारे सपने
प्यार के रंग कई होते हैं ऐ दोस्त
रंग दिखाते रहते हैं कभी पराये कभी अपने
कभी तो तोड़ देता है कोई किसी को
कभी टूट जाते हैं उसके अपने सपने
फूल के साथ काँटे तो होते ही हैं
काँटों में रंग नहीं भर पाती हैं कोई भी बहारें
फिर भी यह तो काँटों की ख़ुशनसीबी है
लोग फूलों के साथ काँटों को भी निहारें
सुलह तो हमें ही करनी है अपनी ज़िंदगी से
चाहे भीड़ में हों या हों अकेले
यूँ ही जूझती रहेगी ज़िंदगी ख़ुद अपने से
यूँ ही चलते रहेंगे दुनिया के मेले
मेले में कोई साथ न दे फिर भी
हम तो साथ हैं अपने हम नहीं हैं अकेले

❄❄❄

मोह

सुबह आई
शाम आई
रात भी चली गई
सर्दी, गर्मी, पतझर और
बरसात भी चली गई
जाने कितने मौसम आये
अब कोई गिनती नहीं
चाँद तारों की सजी
बारात भी चली गई
फिर भी ज़िंदगी की डोर
छोड़ने का दिल नहीं
चाहे आशाओं भरी
सुनहरी रात भी चली गई
कैसा है यह मोह
जिसमें फँस रहा मानव का दिल
जबकि उसकी ज़िंदगी से
ज़िंदगी भी चली गई

❄❄❄

फूल और काँटे

दुनिया क्या है
किसमत का खेल है
सभी की किसमत में
कहीं न कहीं मेल है
भगवान ने तो बाँटे फूल और काँटे
किसी को हुआ लाभ किसी को पड़े घाटे
किसी को अधिक
किसी को कम
पर दिये तो सभी को
फिर काहे का ग़म
अपने-अपने हिस्से के
फूल और काँटे
तुम्हें ख़ुद ही चुनने हैं
अपने हिस्से में आये
स्नेह प्यार के शब्द
या
ताने और व्यंग्य
सब तुम्हें ख़ुद ही सुनने हैं
कर सकते हो
तो इतना करो
कि फूल सबके साथ बाँट लो
और काँटे
सिर्फ़ अपने दामन में समेट लो
शायद कभी यही काँटे
फूल बन कर
तुम्हारे दामन को
ख़ुशियों से भर दें

❄❄❄

कुछ विचार

चढ़ते सूरज को सदा
करते सभी सलाम
जो गिरते को थाम ले
बन जाता भगवान
बन जाता भगवान
करें सब उसकी पूजा
उस जैसा पूरी दुनिया में
कोई लगे न दूजा

गीता में प्रभु ने कहा
करता चल तू काम
फल की इच्छा त्याग दे
तब पायेगा नाम
तब पायेगा नाम
जगत में सुख पायेगा
करे अगर विपरीत
सदा ही दुख पायेगा

जो बोया काटे वही
यही भाग्य की बात
अच्छा बोये सुख मिले
बुरा बोये आघात
बुरा बोये आघात मिले
सब कुछ लुट जाये
अपने और पराये सबका
संग साथ छुट जाये

❄❄❄

सूनी आँखों के सपने

सजा ले आज सपनों से
तू अपनी सूनी आँखों को
पता क्या कल का
कल आये या न आये
पुरानी नींद तेरी ग़र नहीं रह पाई तो बन्धु
पुराने स्वप्न सीने से लगाये
क्यों तू फिरता है
भरे बीते दिनों की याद आँखों में
सदा क्षितिज के सूनेपन में
क्यों डूबा तू रहता है
छिपा क्या अगले पल के गर्भ में
यह कौन कह पाया
बहेगा कितना जल नदिया में
इसको कौन गह पाया
नहीं तू पायेगा कुछ भी
ये कल-कल के झमेले में
न बीता कल तेरा था
और न आने वाले कल पर ही
वश तेरा दुनिया के मेले में
तू जितनी छीन सकता है ख़ुशी
ले छीन सपनों से
अभी जो भी ख़ुशी है पास तेरे बाँट ले अपनों से
क्या पता ऐसा सुअवसर फिर कभी आये न आये
सजा ले आज सपनों से
तू अपनी सूनी आँखों को
पता क्या कल का
कल आये या न आये

❊❊❊

ज़िंदगी में

सुख के कुछ दिन
आये थे ज़िंदगी में
हमने भी बहारों के सपने
देखे थे ज़िंदगी में
हमने भी प्यार के नग़मे
गाये थे ज़िंदगी में
हमने भी चाँद तारों को तराने
सुनाये थे ज़िंदगी में
हमने भी सागर की लहरों की तरह
बल खाये थे ज़िंदगी में
फिर एक दिन
अपनों के हाथों ही
छल खाये ज़िंदगी में
वक़्त बदला
बदल गये सारे
ग़म के बादल गहराये ज़िंदगी में
सबकी नज़रों के
बदलते तेवर देखे
हम पहली बार घबराये ज़िंदगी में
या ख़ुदा
हमको बना कठपुतली
ख़ूब नचाया तूने हमें ज़िंदगी में
कभी हँसा कर
कभी रुला कर
ख़ूब जोकर बनाया हमें ज़िंदगी में

❄❄❄

उदास झुर्रियाँ

उम्र के साथ चलते-चलते
आज मैं
एक बंद गली में पहुँच गई हूँ
उस बंद गली के आखिरी मकान में
मैं अपने अतीत वर्तमान और
भविष्य सहित बंद हो गई हूँ
हर दिन भविष्य को वर्तमान और
वर्तमान को अतीत बना कर
मेरे चेहरे में
एक झुर्री और बढ़ा जाता है
मैं उन उदास झुर्रियों में
अपनी कमज़ोर धुँधली आँखों से
अपने होने न होने का
अपने अस्तित्व को खोने का
अर्थ तलाशती रहती हूँ
खण्डित हृदय और थकित मस्तिष्क से
अतीत की कुछ लाचार
अनुभूतियों को तराशती रहती हूँ
वक़्त की नदी की धार में बहते-बहते
उम्र के साथ चलते-चलते
बंद गली के आखिरी मकान में
उदास झुर्रियाँ गिनते-गिनते

❄❄❄

सड़क पर भागते सपने

क्या तुमने कभी
सड़क पर भागते सपनों को देखा है
मैंने देखा है
छोटे सपने, बड़े सपने, जवान सपने, बूढ़े सपने
बस्ते में, ब्रीफ केस में
कंधे पर लटकते पर्स में बंद सपने
सब सड़क पर भागते जा रहे हैं
साईकिल पर रिक्शा या बसों में धक्के खाते
भीड़ में पिसते या डंडे से लटकते सपने
ऊँचे-ऊँचे सपने वातानुकूलित गाड़ियों में
और छोटे-छोटे सपने पैदल ही भाग रहे हैं
गर्मी सर्दी बरसात हर मौसम को सहते सपने
हर छोटे बड़े की आँखों में काजल से रहते सपने
दिमाग़ में पलते सपने
दिल में पिघलते सपने
कभी आँखों से बहते सपने
कभी आँखों में चमकते सपने
किसमत पर पड़ी ग़र्द को बुहारने के सपने
अतीत की भूलों को सुधारने के सपने
भविष्य के पलों को सँवारने के सपने
मंज़िल की खोज में सड़क पर चलते सपने
सब अपनी धुन में सड़क पर भागते जा रहे हैं
यह सड़क इसकी गवाह है
मैंने इन भागते सपनों को
बहुत निकट से देखा है
महसूस किया है
इनको जिया है

❄❄❄

हालातों का मिजाज़

कभी-कभी मजबूरियाँ
पसीना बन कर
माथे से टपकने लगती हैं
बूँद-बूँद बन कर
चेहरे से टप-टप टपकते हालात
चेहरे को पूरे अस्तित्व का
आईना बना देते हैं
हृदय में सहेज कर छुपाये गये
कुछ छाले फूट कर
आँखों के रास्ते बह निकलते हैं
यत्न से ओढ़ा गया नक़ाब
तार-तार हो जाता है
अहं का शीशा टूट कर
किरच-किरच बिखर जाता है
क्यों कभी-कभी
हालातों का मिजाज़
इतना बिगड़ जाता है

❄❄❄

सफ़र जारी रहेगा

मैं रेशम हूँ तुम आग-आग
कहो साथ कैसे निभेगा
मैं गीत-गीत तुम बे आवाज़
कहो सुर कैसे सधेगा
मैं मंज़िल तक जाना चाहूँ
तुम खींच रहे पीछे-पीछे
कहो सफ़र कैसे चलेगा
मैं तार-तार तुम सख्त हाथ
कहो साज़ कैसे बजेगा
मैं प्यार-प्यार तुम दुनियादार
कहो नेह कैसे बढ़ेगा
रेशमी उलझनों को
सुलझा लो बढ़ा कर हाथ
सफ़र जारी रहेगा
कदम से कदम मिला कर चलो
आओ स्नेह की शक्ति से कसकर
पकड़ लो हाथ
सफ़र जारी रहेगा

❄❄❄

कुछ हमने कहा

आईने से हमने पूछा क्या हमें पहचानते हो
हँस के उसने कह दिया शायद कभी देखा तो है

तंज से वो मुस्कुरा कर हमको घायल कर गये
मुस्कुराहट में भी क्या इतनी धार होती है

उलझनें सुलझीं नहीं गाँठें नई पड़तीं गईं
टूट कर शीशा कभी क्या जुड़ सका है

दे कर गुलाब हाथ में वो मुड़ गये यह कह कर
फूल और काँटे दोनों तुम्हारे लिये हैं

खुद को तो बरसों से हम भूले हुए थे
आईने ने भी पहचानने से इन्कार कर दिया

वक़्त के साथ ज़िंदगी के फ़लसफ़े बदल लेते हैं
कुछ लोग बड़े ढंग से ज़िंदगी जी लेते हैं

कुछ न कह कर बहुत कुछ, कह कर वो मुड़कर चल दिये
ये ख़ामोशी भी क्या कयामत है

कुछ हमने कहा कुछ तुम समझे
ये रिश्ते का कौन-सा ढंग है
एक दिल में भरा प्यार है
दूसरे दिल में भरी जंग है

❋❋❋

धर्म से मुलाकात

एक प्रश्न है—धर्मयुद्ध करने वाले बन्धुओं से
क्या तुमने कभी धर्म को देखा है
क्या कभी हुई धर्म से मुलाकात
क्या कभी तुमने करी उससे बात
किसी धर्म ने दिया निर्देश बँटने का बाँटने का
किसने आदेश दिया कटने का काटने का
किसने उपदेश दिया मरने का मारने का
बन्धु मेरे—एक बार सब धर्मों की पुस्तकें पढ़ कर
उनके एक-एक वाक्य का अर्थ मन में गढ़ कर
एक बात अवश्य समझाना
किस धर्म ने तुम्हें घृणा द्वेष का पाठ पढ़ाया
किस ने तुम्हें चोरी झूठ हत्या का पाप सिखाया
ये पाठ तुम्हें किसी धर्म की किसी पुस्तक में नहीं मिलेंगे
क्योंकि हर धर्म का लक्ष्य एक है
सबका इरादा एक है, नेक है
अपने इष्ट को ढूँढ ले अपने ढंग से
अलग-अलग रास्तों से
सब मिलना चाहते हैं एक शक्ति से
उसको रिझाना चाहते हैं, अपने विश्वास अपनी भक्ति से
धर्मान्ध बन कर मानवता को मत छोड़ो
देवत्व को दानवता की ओर मत मोड़ो
तुम जियो अपनी आस्था के साथ
दूसरे को जीने दो उसकी आस्था के साथ
प्रेम से प्राप्त होगा लक्ष्य
प्रेम से जीवन हो जायेगा धन्य

❄❄❄

गिरा एक पत्ता

आया एक झोंका
न जाने कहाँ से
टूट कर गिरा एक पत्ता
अपने जहाँ से
उड़ कर गया कहाँ
कौन जाने
कभी था भी यहाँ
कौन माने
ऐसा गया उड़ कर
लौट कर न आया
ऐसा गया जुड़ कर
छोड़ गया छाया
देकर जगह नये पत्तों को
चला गया दूर
पुराने पत्तों की जगह
फूटेंगे नव अँकुर
छोड़ गया कुछ यादें
अपनी जड़ों में
शायद नव पल्लव मानें
जो कहा था बड़ों ने

❄❄❄

जो सहारा बने

यूँ कोई ज़िंदगी में मिले हमसफ़र
जो सहारा बने मेरा हर राह पर
जैसे सागर में नदिया है जाकर मिले
जैसे चंदा से मिल कर रहे चाँदनी
जैसे हाथों से मेहँदी का होता मिलन
जैसे कोयल के स्वर में कुहू की ध्वनि
जैसे फूलों की खुशबू छुपी फूल में
जैसे भँवरे की गुन-गुन बने रागिनी
कोई मिल जाये साथी जो दिल की सुने
मेरी बातों को कर दे न जो अनसुनी
रात दिन मेरे मन में जले दीप सा
जिसकी सच्चाई की मैं बनूँ बावरी
कोई भर दे मेरी ज़िंदगी में खुशी
शुक्रिया उसका करती रहूँ उम्र भर
यूँ कोई ज़िंदगी में मिले हमसफ़र
जो सहारा बने मेरा हर राह पर

❄❄❄

लम्बे इन्तज़ार

छोटी सी ज़िंदगी
इन्तज़ार कितने बड़े
लगता है जहाँ से चले थे
वहीं हैं खड़े
सुबह से शाम तक की दूरी
घंटों की नहीं
वर्षों की सी लगती है
किसी को आवाज़ लगाने के लिए
आवाज़ घुटती सी लगती है
शाम की लम्बी परछाइयाँ
लम्बी रातों के
काले साये में बदल जाती है
मीलों लम्बी काली रातों में
तबीयत दहल जाती है
सुबह के सूरज की इन्तज़ार में
रात के अँधेरों से
कितनी बार लड़े
चार दिन की चाँदनी
इन्तज़ार कितने बड़े

❋❋❋

कल्पना के पंख पर

कल्पना के पंख पर
चढ़ कर चली
मैं उड़ चली
इस तरफ़ को
उस तरफ़ को
किस तरफ़ मैं मुड़ चली
धार में नदियों की बहकर
सागरों की लहर गिन कर
पर्वतों की चोटियों पर
बादलों के पार दिन भर
दूर जंगल के किसी
आकाश छूते पेड़ पर
मैं बैठ आई
पर्वतों से उतर कर
पाताल छूती वादियों में
लेट आई
फिर उड़ी
उड़ कर चली
मैं दूर क्षितिज की तरफ़
जाकर जहाँ आकाश से
धरती जुड़ी
उड़ रही उड़ती रही मैं
कल्पना के पंख पर मैं
जोड़ने आकाश से
धरती चली

❋❋❋

साँवला सागर

सागर तट पर बैठ कर
ओर-छोर-हीन आसमान
और सामने बिखरे असीम सागर को देखना
फिर अचानक
अलंघ्य दूरियों से आते
गरजते उफ़नते दहाड़ते
विकराल तूफ़ानों की आवाज़ें सुनना
कुछ देर बाद तूफ़ान का थमना
जैसे करोड़ों ढोल नगाड़ों का
एक साथ बंद हो जाना
विचित्र अनुभव
हृदय खो कर रह जाता है
ऊपर नीचे के अथाह नीले रंग में
धीरे-धीरे शाम की परछाइयाँ मंडराने लगती हैं
आत्मा रंग जाती है शाम के धुँधलके में
सागर के शाम से सँवलाये
साँवले रंग में

❋❋❋

यादों के ख़ज़ाने लुट गए

तेरी यादों के ख़ज़ाने लुट गये
तेरी यादों के धुँए में घुट गये
स्वप्न बिखरे टूटे दिल के तार भी
ज़िंदगी लगती बड़ी बेज़ार सी
हर तरफ़ वीरान सा आता नज़र
जैसे किसमत पर अँधेरे छा गये
आँधियाँ ग़म की सताने आ गईं
हर तरफ़ तूफ़ान सा छाया हुआ
रास्तों के दीप सारे बुझ गये
मंज़िलों का रास्ता भी गुम हुआ
ढूँढते रहते हैं तुमको हर जगह
क्यों नहीं आती है जीवन में सुबह
तुम तो सूरज थे मेरे क्यों छुप गये
ज़िंदगी में क्यों अँधेरे छा गये
मेरी यादों में तो बस तुम एक हो
कौन अनजाने तुम्हें अब भा गये
ज़िंदगी जीना बना इक बोझ-सा
दिल पे छाया हर समय इक शोक-सा
डाल से बिछड़े हुए पत्ते हैं हम
ज़िंदगी के सब सहारे छुट गए
तेरी यादों के ख़ज़ाने लुट गये

❋❋❋

तरंग के तराने

जब कभी
सागर किनारे बैठती हूँ
हर लहर से
प्रश्न कुछ मैं पूछती हूँ
जब कभी
आती है लहरें चरण छूने
शीश पर रख कर उन्हें
मैं चूमती हूँ
भूल जाती हूँ
मैं सुख दुख ज़िंदगी के
निर्विकार हो
मैं लहरों को गिनती हूँ
हर लहर आ कर
छोड़ जाती है कुछ यादें
रेत में से उन्हें
मैं चुनती हूँ
हर लहर
छोड़ जाती है कुछ संदेशे
हर तरंग के तराने
मैं सुनती हूँ
लहरों और तरंगों के
उलझे से जाल से
कुछ नये सपने
रोज़ मैं बुनती हूँ।

❊❊❊

समय अलबेला है

समय का पहिया
घूम रहा है
अपना चक्र पूरा कर
मंज़िल की ओर बढ़ रहा है
अब अन्तिम लक्ष्य निकट है
गमन की वेला है
मानव का भाग्य
पल-पल झूम रहा है
कभी सुख कभी दुख
सौभाग्य दुर्भाग्य
अँधेरा उजाला
सभी कुछ तो झेला है
दुनिया एक रंगमंच
पात्र आते हैं
अभिनय करते हैं
मिल कर रहते हैं
फिर अकेले चले जाते हैं
दुनिया एक मेला है
समय पर किसी का बस नहीं
समय नचाता है
इन्सान नाचता है
इन्सान का जीवन
वक़्त का इशारा है
समय बड़ा अलबेला है

❊❊❊

नज़र न लग जाये

बिखरते रिश्तों की डोर
बड़ी कच्ची होती है
ज़ोर से न झटको
कहीं टूट न जाये।
दिल की दुनिया
बड़ी नाजुक होती है
किसी को न बसाना
कोई लूट कर न ले जाये।
सच्चाई का दामन
कभी न छोड़ना
कहीं झूठे का सच भी
झूठ न बन जाये।
रिश्तों की डोरियाँ
बाँध कर रखना
किसी की नज़र न लग जाये
कहीं फूट न पड़ जाये।
वक़्त रहते रिश्तों को बचा लेना
कहीं सदा के लिये
कोई रूठ न जाये।

❄❄❄

फिलहाल

एक और दिन बीत रहा है
सुबह हुई थी
कहते हैं सुबह
सुनहरी होती है
हुई होगी
दोपहर भी आई थी
कुछ तीखी सी
कुछ तीती सी
धीरे-धीरे दिन बीत रहा है
सूरज अपने घर जा रहा है
लम्बी होती परछाइयों के साथ
रेशमी चादर की
सलवटों सी फिसलती
अँधेरे की चादर
धीरे-धीरे मेरे घर में
प्रवेश कर रही है
शायद चुपके चुपके
मेरे मन में भी
काँटों की सेज सी
अँधेरी काली रात
चढ़ती आ रही है
घुटन बढ़ती जा रही है
शायद कल फिर सुबह होगी
फिलहाल—
एक और दिन बीत रहा है

❊❊❊

गुनगुनी धूप सी यादें

गुनगुनी धूप सी यादें
जब तब आ कर
कानों में धीमे से
न जाने क्या-क्या गुनगुना जाती हैं
यादों की यह सरगम
स से शुरु हो कर
स पर ही समाप्त हो जाती है
और सुर ताल सहित
सिर से पाँव तक
दिल से दिमाग़ तक व्याप्त हो जाती है
ये यादें पल-पल मुझे तोड़ती हैं
बार-बार मेरे वर्तमान और भविष्य को
अतीत से जोड़ती हैं
यादों के इस जंगल से
जितना मैं निकलना चाहती हूँ
उतना और उलझती जाती हूँ
धीरे-धीरे गुनगुनी धूप-सी यादें
तीव्र अग्नि की लपटों में बदल जाती हैं
मेरे हृदय और मस्तिष्क को
झुलसाने लगती हैं
मेरे तन मन को दहकाने लगती हैं
यादों की यह झुँझलाहट और गुनगुनाहट
चलती रहती है
गुनगुनी धूप सी यादें
जब तब आ-आ कर
मचलती रहती हैं

❋❋❋

कितना बड़ा लुटेरा

सूरज तो निकल गया
फिर क्यों हर तरफ़ अँधेरा है
क्या सूरज की रौशनी भी लूट ली
आदमी कितना बड़ा लुटेरा है
कैसे पहचानें कौन अपना है
और है पराया कौन
हर चेहरे पर तो मुखौटा है
चेहरे पर दिल की झलक तक नहीं
आदमी का दिल भी कितना छोटा है
पल में लूटा और पल में मार दिया
हर तरफ़ यह कैसी हैवानियत है
आदमी के भेष में रह कर भी
आदमी भूल गया इन्सानियत है
जहाँ कुछ मिला रुक गया
जिधर फ़ायदा उधर झुक गया
दोस्त और दुश्मन का अर्थ भी भूल गया
आदमी कितना बड़ा बहुरुपिया है

❊❊❊

उज्ज्वल भविष्य

आओ
हम अतीत की गहराइयों से
भविष्य को ढूँढ लायें
वे भूले हुए वर्ष
जिनमें हुआ
कभी उत्कर्ष
कभी अपकर्ष
वे कौन सी भूलें थीं
जिनसे हमने
बहुत कुछ खोया
कैसे थे वे क्षण
जिनमें हमने
अपने लिये
काँटों को बोया
विश्वासों पर
कैसे-कैसे आघात हुए
देश और समाज में
कैसे उत्पात हुए
आओ
हम अतीत की भूलों से पाये
दुःखद क्षणों के बदले
सुखद अनुभूतियों से भरा
उज्ज्वल भविष्य ढूँढ लायें

❄❄❄

कोई बता दे

आँसू भी छुपाने हैं
ग़म भी छुपाने हैं
ज़िंदगी तुझे कहाँ छुपायें
कोई बता दे
दिल किरच-किरच टूटा
दिल का फफोला फूटा
कैसे ज़ख़्म छुपायें
कोई बता दे
न मुँह से आह निकले
न दिल से चाह निकले
दिल कैसे मर ये जाये
कोई बता दे
जीना भी बड़ा मुश्किल
मरना भी बड़ा मुश्किल
जायें तो कहाँ जायें
कोई बता दे
हर बात पाप लगती
हर साँस शाप लगती
साँसें कहाँ ये जायें
कोई बता दे

❊❊❊

हताशा

ज़िंदगी एक निराशा है
पग-पग पर तनहाई
पग-पग पर रुसवाई
क्षण-क्षण पर टूटे
अहसासों की सुनवाई
अब न कभी जीवन में
बाजेगी शहनाई
ज़िंदगी एक हताशा है

शायद कुछ बदल जाये
ऐसा ही मान लें
कोई कहीं मिल जाये
ऐसा अरमान है
कुछ पल को भीड़ में
कोई पहचान ले
काश कोई खुशियों का
कुछ तो सामान दे
ज़िंदगी एक झूठी आशा है

❄❄❄

हृदय का जल आँख तक

बह रहे नयनों से अश्रु
धुल रहे अन्तर के दाग़
जल बरसता है नयन से
बुझ रही अन्तर की आग
क्या है परिभाषा हृदय की
कौन सी भाषा हृदय की
क्या कहें आँखें हृदय से
क्यों बहें आँसू हृदय से
कौन-सा नाता नयन का है हृदय से
क्यों हृदय का नीर बहता है नयन से
हृदय की भाषा नयन कैसे बतायें
हृदय के सपने नयन कैसे दिखायें
भेद यह अब तक न कोई जान पाया
बंद नयनों में जगत कैसे समाया
हृदय का जल आँख तक कैसे है आया
आँख ने देखा उसे, दिल को जलाया
दोनों मिल कर कर रहे
अब अपनी बात
बह रहे नयनों से अश्रु
धुल रहे अन्तर के दाग़

❄❄❄

इस बरस

इस बरस बरसा जो पानी
था कभी ऐसा न बरसा
दिन महीने बरस तो बीते बहुत
पर दिल कभी ऐसा न तरसा
हर बरस आया किये सावन के दिन भी
हम जिया करते रहे साजन के बिन भी
गरज कर आते रहे बादल डराने
बिजलियाँ किसमत पे कड़कीं हर बहाने
धुँध सी छाई रही दिल पर हमारे
हम जिया करते थे तनहा बेसहारे
रौशनी की इक किरण ढूँढा किये हम
ख़ुद को झूठी आस से लूटा किये हम
कब तलक दिल को छले जायें बता दो
टूटे दिल को ले कहाँ जायें बता दो
हर नया मौसम हमें आता जलाने
रो के बादल ख़ुद हमें आते रूलाने
उठ रहे तूफ़ान दिल में और ऊपर आसमाँ पर
सो गया मालिक जहाँ का मेरी किसमत को सुलाकर
फिर अचानक मन में आईं कुछ तेरी यादें सुहानी
दिल में गूँजी फिर तेरी बातें पुरानी
और दिल ने भूल सब कुछ
उन हसीं लम्हों को परसा
इस बरस बरसा जो पानी
था कभी ऐसा न बरसा

❄❄❄

सामने बैठे रहो

मेरे साथी बात कर लो
बैठ कर तुम दो पहर
कल का क्या मर जायें हम
तुमको न मिल पाये ख़बर
मेरे ग़म की सब दवायें
सिर्फ़ तेरे पास हैं
आस हमको सिर्फ़ तेरी
जब तलक यह साँस है
याद तेरी रात-दिन है
जान तेरा नाम है
दो हरफ़ तू बोल ले
यह आस सुबह शाम है
हम बहुत भोले हैं या
नादान हैं तुम ही कहो
ज़ो भी हैं बस चाहते
तुम सामने बैठे रहो
ज़िंदगी में सिर्फ़ तेरी
चाह ही हमने करी
लाख तेरे सितम सह कर
आह न हमने भरी
दूर तुम जाओ न हमसे
ढाओ न हम पर कहर
सामने बैठो पिला दो
अपने हाथों से ज़हर

❄❄❄

तुम बदल गये

कभी न सोचा था
कि तुम ऐसे बदल जाओगे
हमारे दिल को सता कर
भला तुम कैसे बहल पाओगे
तुम तो बदल गये
गये मौसम की तरह
तुम तो बदल गये दिन रात की तरह
तुम बदल गये
गये दिनों की तरह
तुम बदल गये क्रूर किसमत की तरह
तुम बदल गये कैलेन्डर की तरह
तुम बदल गये दुनिया के बदलते रुख की तरह
तुम बदल गये वक़्त की अदाओं की तरह
तुम बदल गये बेवफ़ा निगाहों की तरह
तुम बदल गये बदलती बहारों की तरह
तुम बदल गये किसमत के सितारों की तरह
फिर भी जब याद हम आयेंगे
दहल जाओगे
हमारे दिल को सता कर
भला तुम कैसे बहल पाओगे

❊❊❊

फ़रिश्ते

धोखे खा-खा कर रिश्तों में
हम मरते जाते किश्तों में
कुछ को भूले कुछ से रूठे
कुछ जुड़े रहे कुछ हैं टूटे
कैसी विडम्बना जीवन की
अपने ही अपनों को लूटें
आकाश से विस्तृत रिश्ते क्यों
कट जाते हैं बालिश्तों में

हमको छलने आ जाते हैं
क्यों लगा मुखौटे अपनों के
सपनों के जाल बिछाते हैं
करते हैं ख़ून फिर सपनों के
जीवन को नर्क बना देते
वादे करते हैं बहिश्तों के

फिर भी जीवन में कभी-कभी
ऐसे क्षण भी आ जाते हैं
जब कोई अपरिचित अनजाने
अपने बन कर आ जाते हैं
सूने जीवन में दीप जला
लिख जाते नाम फ़रिश्तों में

❊❊❊

न याद करूँ

कुछ याद रहा कुछ भूल गया
कुछ बन कर फूल खिला दिल में
कुछ चुभा गड़ा बन शूल गया
अब यत्न एक ही रहता है
सुख-दुख कुछ भी न याद रहे
न लहराये सुख की नदिया
न कण भर भी अवसाद रहे
सुख-दुख की और ख़ुशी ग़म की
रेखायें अगर सब मिट जायें
मेरे मन दर्पण में आ कर
गीता की शान्ति समा जाये
सुख-दुख सम कृत्वा जानो
गीता में प्रभु ने यही कहा
प्रभु शक्ति मुझे बस दो इतनी
न याद करूँ जो कभी सहा
जीना सीखूँ मैं बन कर विदेह
जो कहा सुना जो सहा कभी
सब कोशिश करके भूल गया

❋❋❋

भाव और क़लम

सम्पूर्ण कलेवर में
कुछ उथल-पुथल हुई
हृदय में कुछ विचार आये
मस्तिष्क में
कुछ भावनायें जागीं
कुछ संवेदनायें पनपीं
कुछ तूफ़ान सा उठा
पूरा अस्तित्व डूब गया
एक अनजानी माया में
एक उबाल सा उठा
सोई सी काया में
धीरे-धीरे
सबका एकीकरण हुआ
भावों और विचारों में
एक समीकरण बना
काया और माया में
सामञ्जस्य हुआ
हृदय और मस्तिष्क
एकाकार हो कर
झनझना उठे हाथों में
हाथ ने उठा ली क़लम
और—
भाव और क़लम मिलकर
कोरे काग़ज़ पर बिखर गए
अन्दर के भाव बाहर आकर
क़लम से निखर गए

❋❋❋

कोई पथदर्शक आ जाये

कोई मन दर्पण में आये
आकर कुछ ऐसे दिख जाये
अन्तर के कोरे काग़ज़ पर
इक नई इबारत लिख जाये
यह नई इबारत ऐसी हो
जिसमें कोई अवसाद न हो
बीते दिन बीती बातों की
जिसमें कोई भी याद न हो
आने वाला कल भी आये
सन्तोष शान्ति ले कर आये
मेरे जीवन की बगिया में
कुछ सुन्दर फूल खिला जाये
जीवन की उलझी राहों में
कोई पथदर्शक आ जाये
मेरे जीवन का लक्ष्य मुझे
जिसकी पनाह में मिल जाये
यह हृदय शान्ति का प्यासा है
कोई यह प्यास बुझा जाये
मृतप्राय ज़िंदगी में मेरी
जीने की आस जगा जाये

❄❄❄

तासीर है ये इनकी

ये ख़ून के हैं रिश्ते, ये ख़ून से पनपते
ये ख़ून से हैं बनते, ये ख़ून ही हैं पीते
ये लाल ख़ून से भी
लाली नहीं हैं लेते
तासीर है ये इनकी
ये हैं सफ़ेद रहते
मेरे ख़ुदा ये कैसा
है सिलसिला बनाया
सबसे अधिक जो अपना
सबसे अधिक पराया
ग़र तोड़ना भी चाहो
तो टूटते नहीं हैं
चाहे लगालें ताक़त
आकाश के फ़रिश्ते
पूजा से मन्नतों से
जो माँग कर हैं लेते
ऐसे अमोल रिश्ते
बन जाते कैसे सस्ते
सालों तलक जो चलते हैं
साथ-साथ इक दिन
मुँह मोड़ कर बदलते हैं
अपने-अपने रस्ते
न टूटते न जुड़ते
गाँठें हैं डोरियों में
टूटें तो पल में लेकिन
बरसों बरस कसकते

❄❄❄

मेरी विकलता

ऊँचे पर्वत से कूदती फाँदती
छलछलाती लहराती बलखाती
निर्बन्ध निर्बाध गति से
बहती नदी सा मेरा जीवन
ये किस मोड़ पर आ कर रुक गया है
ये कैसा भयावह लक्ष्यहीन पथहीन
आकर्षण हीन बन कर
रह गया है मेरा
अनवरत कार्यरत जीवन
न कोई विचार न भावनायें न कामनायें
शायद कुछ समय बाद संवेदनायें भी
समाप्त हो जायेंगी
और मैं एक ज़िन्दा लाश की तरह
चलती-फिरती हँसती बोलती
खाती-पीती ज़िंदगी बिताती रहूँगी
लोग समझते रहेंगे
मैं एक राजसी जीवन जी रही हूँ
कोई मेरे भीतर के ख़ालीपन को
देख नहीं पायेगा
मेरे अन्दर के अँधेरे में
झाँक नहीं पायेगा
मेरी विडम्बना
मेरी विकलता
आँक नहीं पायेगा

❄❄❄

नये वस्त्र

विधाता के दिये इस जीवन के
बहुत से मोड़ मैंने पार किये
शैशव से बचपन
बचपन से कैशोर्य
कैशार्य से यौवन
ये सारे मोड़ आनन्दपूर्ण
अल्हड़ ठिठोलियों से भरे थे
किसी मोड़ पर रुकने का काम नहीं था
अपनी शक्ति और आत्मविश्वास के कारण
किसी के आगे झुकने का नाम नहीं था
हर अगला रास्ता
और अधिक रोमाँचक था, आकर्षक था
फिर आई प्रौढ़ावस्था
उत्तरदायित्व और तनाव थे
पर जीवन में कुछ बहाव भी थे
बहते-बहते न जाने कब
ज़िंदगी के सारे दिन निकल गए
एक मोड़ पर आकर ज़िंदगी के सारे पल
हाथ से फिसल गए
आगे जाने की कोई राह नहीं
कुछ कर पाने की हिम्मत नहीं
कुछ भी करने की चाह नहीं
अगला इन्तज़ार केवल उस सरिता का है
जिसमें नहा कर यह काया
पुराने वस्त्र त्याग कर
नये वस्त्र धारण करेगी

❋❋❋

दोहे

मुझसे धोखा कर रहे मेरे अपने मित्र।
करूँ भरोसा कौन ये दुनिया बड़ी विचित्र ॥

विश्वासों पर घात कर वो करते आघात।
पर मैं अपनों पर करूँ कैसे प्रत्याघात ॥

आँखों की भाषा पढ़े कोई अपना मीत।
दिल की भाषा पढ़ सके तभी मीत की प्रीत ॥

पढ़ ले मन की बात को जब मैं बैठूँ मौन।
ऐसा अपने मीत बिन भला कर सके कौन ॥

अपना समझा था जिन्हें घात करें वो मित्र।
शत्रु अगर ऐसा करे तो न लगे विचित्र ॥

धोखा खा कर मर गए अपनों से कुछ लोग।
क्यों अपने धोखा करें यह विधि का संयोग ॥

लालच से लालच बढ़े लालच बुरी बलाय।
रातों की नींदें उड़ें दिन का चैन उड़ाय॥

❋❋❋

उलझन के लच्छे

कशमकश में उलझ कर
कुछ फ़ैसले लेते हैं हम
नहीं सोचते चलेंगे कब तक
या उनमें है कितना दम
जीवन के हर मोड़ पे हमको
मिल जाते उलझन के लच्छे
हर इक राह पर
हर मुकाम पर
टँगे मिलें उलझन के गुच्छे
दिल दिमाग़ में पड़ जाती हैं
कुछ गाँठें कच्ची पक्की
जिन्हें खोलने में कट जाती
इन्सान की पूरी ज़िंदगी
कई फ़ैसले पहुँचा देते
मंज़िल की राहों पर
कई फ़ैसले बीच राह में
उलझा कर देते ठोकर
बाधा आ जाती राहों में
चलते, रुकते, बढ़ते, चढ़ते, कदम।
अच्छा है उलझें न कभी
ऐसी कशमकश में हम।
सही समय पर सही फ़ैसला
लेने की हिम्मत
अगर आ जायेगी
तो ज़िंदगी की बहुत सी
उलझनें सुलझ जायेंगी

❋❋❋

ख़ुशियाँ मीत की

देख कर ख़ुशियाँ किसी की
तुम अगर ख़ुश हो गये
तो समझ लो ज़िंदगी की
दौड़ तुमने जीत ली
यूँ तो तुम अर्जित हो करते
धन और दौलत रात-दिन
है धनी सबसे बड़ा जो
दौलत कमा ले प्रीत की
मानना अपना सभी को
है तनिक मुश्किल मगर
अपनी ख़ुशियों में करो
शामिल तो ख़ुशियाँ मीत की
बन्धु सब अपने हैं ऐसा
मान ले जो सहृदय
हो गई उस पर कृपा
उस ईश के संगीत की
अपनी ख़ुशियों में करो
शामिल तो ख़ुशियाँ मीत की

❋❋❋

कितने अकेले

विचारों के रेले जब आते हैं
तो आते ही चले जाते हैं
भविष्य के सपने
वर्तमान की सच्चाईयाँ
अतीत के मेले
जब तब आते हैं
जाने क्या-क्या बताते हैं
कभी हँसाते हैं
कभी रुलाते हैं
पल-पल सताते हैं
सोते में जगाते हैं
सामने आ जाते हैं
उन लम्हों के चित्र
जो समय समय पर झेले
चित्रों में सभी तो आते हैं
दूर पार के रिश्ते
जीवन में आये
कुछ शैतान
कुछ फ़रिश्ते
समय के साथ-साथ
चित्र बदल जाते हैं
तोते की तरह आँख फेर कर
मित्र बदल जाते हैं
चारों तरफ़ दोस्तों
और दुश्मनों के हैं मेले
पर भीड़ में भी कितने
हम हैं अकेले

❊❊❊

एक हँसी झूठी

जब सिर्फ़ अपनी तरफ़ देखो
तो लगता है
ख़ुदा ने हमें ही दिये हैं दुनिया भर के दुख दर्द
हमें ही मिली हैं आहें सर्द
हम ही रहते हैं ज़हर पी-पी कर
हम ही रहते हैं घाव सी-सी कर
हम सा परेशान कोई और नहीं
हम सा वीरान कोई और नहीं
पर जब आँख और दिल खोल के देखो दुनिया
होगे हैरान पशेमान ये कैसी है दुनिया
दिल में औरों के जब तुम झाँकोगे
अपने ग़म को कहीं कम आँकोगे
सबके दिल में छुपे हज़ारों ज़ख़्म
हर बशर ग़म छुपाये जीता है
मुँह पे चिपका के एक हँसी झूठी
ग़म को दिल में छुपा के पीता है
एक नक़ली नक़ाब में चेहरा छुपाकर
हँसना, बात करना, काम करना और
दुःख-दर्द, रंजो ग़म सबको
रखना दिल के कोनों में दबा कर
अपने ग़म ख़ुद ही सहने पड़ते हैं
दूसरों को दिखा कर व्यंग्य ही सहते हैं
चेहरे पर खिंची एक इंच मुस्कान
और एक झूठी हँसी आवश्यक है जीने के लिये
सिर्फ़ अपनी ओर न देखो
ख़ुदा ने सभी को बाँटे हैं
ख़ुशी-सुख और दुख दर्द

❋❋❋

भीषण अंगार

दहकते अंगारे
अपनों के ताने
मरने के बहाने
अपनों के उलाहने
दूसरे अगर चाहें
काँटों से छेद दें
सारे शरीर को
पत्थरों से बेध दें
फिर भी दिमाग़ में
न इतनी पीड़ा हो
दिल में दिमाग़ में
न इतनी ब्रीड़ा हो
जितना अगर कोई
अपना दुत्कार दे
या कोई अपना
न आदर सत्कार दे
फूल भी सुलग कर
भीषण अंगार दे
फूल फेंक कर कोई
अपना अगर मार दे
दूसरों के पत्थर तो
फिर भी सह जायें
अपनों की बातें भी
पत्थर बन जायें
जीने के सारे सहारे छिन जायें
बन जायें हम पत्थर
पत्थरों को बिन खाये

❋❋❋

ऐसा वैज्ञानिक

सुना है आज के इन्सान की
ताक़त और बुद्धि का जवाब नहीं
वह क्या-क्या कर सकता है
इसका हिसाब नहीं
उसने वश में कर लिया है
अग्नि, वायु और वरुण को
पहुँच गया है चाँद तक
छूना चाहता है अरुण को
देश काल की सीमाओं को जीत कर
घर बैठे सारी ख़बर रखता है
असीम को सीमित करने के वहम में
स्वयं को अमर समझता है
किया है बुद्धि का प्रयोग
केवल भौतिकता के लिए
नहीं रखे कुछ भी क्षण
नेह और भौतिकता के लिए
लूट लिये कुछ पल
भौतिक ऐश्वर्य और झूठी आशाओं के
समेट लिये बदले में बादल
युद्ध, अशाँति और निराशाओं के
आज ज़रूरत नहीं
झूठे दिखावे की या झूठी शान की
आज तो चाहिये कोई बुद्धि विज्ञान की
जो मानव को दानव नहीं
मानव बना दे
उसे संहार से सृजन की ओर बढ़ा दे
चाहिये कोई ऐसा वैज्ञानिक
जो आदमी को
फिर से आदमी बना दे

❊❊❊

सागर की सीख

न मंज़िल है कोई न कोई ठिकाना
मगर ज़िंदगी को तो फिर भी निभाना
न कोसों तलक रौशनी की झलक है
अँधेरे के बादल ही मीलों तलक हैं
ये सागर मुझे पास क्यों है बुलाये
मुझे अपनी लहरों पे क्यों है झुलाये
है शायद ये चाहे मुझे कुछ दिखाना
कहीं दूर क्षितिज में कुछ है अजाना
वहाँ आस की रौशनी ढूँढ लो तुम
ले विश्वास की डोर अब झूल लो तुम
जहाँ में जो रहना तो सब कुछ भुला दो
उठा सिर को जीने की आदत बना लो
जियोगे कहाँ तक भला सिर झुकाये
हैं आगे तुम्हारे बहारों के साये
मुझे चीरती जा रही है जो नैया
वहाँ उसमें बैठा है उसका खिवैया
मिलेगा किसी दिन तुम्हें भी किनारा
कोई आके तुमको भी देगा सहारा
सहारा तुम्हें खोजना अपने अन्दर
ज़रा खोल कर बैठो अन्तर का मन्दिर
निराशा की दीवार को है गिराना
है मंज़िल तुम्हारी तुम्हारा ठिकाना

❄❄❄

ज़िंदगी की शाम

गोया कि मेरी ज़िंदगी की शाम हो गई
मेरी ज़िंदगी तो ज़ालिम तेरे नाम हो गई
मेरी ज़िंदगी की सुबह दोपहर हो गई ख़तम
रातों में नींद नहीं, दिन में आँखें रहतीं नम
यूँ ज़िदगी में एक अँधियारी सी छा गई
मेरी ज़िंदगी की ख़लिश उजियारी को खा गई
मैं ज़िंदगी की दौड़ में नाकाम ही रहा
है नाम-धाम कुछ नहीं बेनाम मैं रहा
जीना तो मेरा सिर्फ़ इक बवाल ही रहा
जीना तो मेरा सिर्फ़ इक सवाल ही रहा
क्यों पल-पल ज़िंदगी का ज़हर पी रहा हूँ मैं
हैं कौन से उसूल जिन्हें जी रहा हूँ मैं
ज़िंदगी की हर ख़ुशी को क्यों खो रहा हूँ मैं
इस ज़िंदगी की लाश को क्यों ढो रहा हूँ मैं

❋❋❋

कितने पड़ाव आते

ज़िंदगी की इस डगर में कितने पड़ाव आते
घूमें नगर-नगर में कितने हैं गाँव आते
हर छोटी बड़ी ये राहें ले कर जहाँ हैं जातीं
लहराती पगडण्डियाँ भी हमको वहाँ ले जातीं
मिलती जहाँ पे धरती क्षितिज में है गगन से
जाते हैं देखने सब उसको बड़ी लगन से
पर क्या कभी भी धरती मिल पाती है गगन से
अम्बर तो दूर धरती से अपने में ही मगन है
यह मृगमरीचिका है सब कुछ कैसा है यह तमाशा
पल-पल में टूटता दिल पल-पल में टूटे आशा
क्या आज तक कभी भी नदिया के तट मिले हैं
दोनों सदा जुदा हैं नदी मध्य में चले है
सुन्दर गुलाब को भी मिलते हैं संग काँटे
सुख और दुख दोनों गये साथ-साथ बाँटे
यह अपनी-अपनी नियति दुख कम मिलें या ज़्यादा
सुख भी मिलेंगे लेकिन ज़्यादा का नहीं है वादा
हार या जीत के हार किसके गले पड़ेंगे
ज़िंदगी की दौड़ में कौन पीछे रहेंगे
और कौन आगे बढ़ेंगे
ज़िंदगी की बाज़ी में किसका कहाँ लगेगा दाँव
चाहे घूमते रहें हम नगर-नगर गाँव-गाँव
कहाँ रूकेगी ज़िंदगी कहाँ कब संघर्ष पड़ाव डालते
घूमें नगर-नगर में कितने हैं गाँव आते

❋❋❋

रिश्तों की धुंधली तसवीरें

रिश्तों की धुँधली तसवीरों में
समय रहते रंग भर लो
कहीं देर न हो जाये
कहीं तुम अपने जीवन को बदरंग न कर लो
रिश्तों की तसवीरें धुँधलाने के बाद भी
हमारे दिल दिमाग़ में, हमारी यादों में
धुँधली नहीं हो पातीं
दिन में यादें बन कर, रात में सपने बन कर
अपनी चमक दिखाती रहती हैं
हम जितना उन्हें न देखने का प्रयत्न करें
वे और अधिक गहराती जाती हैं
भुलाने के प्रयत्न में ये तस्वीरें और भी अधिक
अपनी पुरानी से पुरानी तसवीरें
हमारे दिल में छापती जाती हैं
हर धुँधली तसवीर अपने साथ अपने से जुड़ी
एक-एक बात को दुहराती जाती है
इन तसवीरों को हम अपने दिल से तो क्या
अपनी अलमारी से निकाल कर भी नहीं फेंक पाते
हम कहीं भी जायें दिल में ये तसवीरें साथ-साथ जाती हैं
दुनिया के हर कोने से, हर कोने में आ-आ कर सताती है
तो क्यों न इस जंग को ख़त्म कर लो
रिश्तों की धुँधली तसवीरों में समय रहते रंग भर लो

❄❄❄

आओ मिल के दो घड़ी

आओ मिल बैठ के दो घड़ी कुछ हम कहें कुछ तुम कहो
अब मिले बरसों के बाद तो कुछ हम सुनें कुछ तुम सुनो
मित्र वक़्त के हर पल में कुछ न कुछ घटता रहा
दिल कुछ के संग मिलता रहा कुछ के संग बँटता रहा
मिलीं ख़ुशियाँ मिले, ग़म भी सबसे मैं मिलता रहा
मिला न जब साथ कोई मैं अकेला ही चलता रहा
मैं अकेला चला था धीरे-धीरे बढ़ता गया घर परिवार
इस तरह बस गया मेरा छोटा-सा संसार
मित्र तुम बिछड़ गए कोई तुमसा मिला भी नहीं
लेकिन ज़िंदगी का यही उसूल है कि
किसी के बिना कुछ रुकता भी नहीं
स्कूल कॉलेज के दिन हमेशा तो रहते नहीं
लेकिन ये दिन हम कभी भुला पाते भी नहीं
फिर जीवन के नये अध्याय शुरु हो जाते हैं
जीवन में नये-नये लोग जुड़ते जाते हैं
हर अध्याय के पात्र अपने-अपने रंग दिखाते हैं
सब लोग जीवन में अपनी-अपनी जंग दिखाते हैं
मैं भी अपनी उलझनों में उलझता गया
जीवन का हर दिन एक कहानी बनता गया
बन्धु आज बरसों बाद लगा जैसे मैं जीवन से दूर नहीं गया
ऐसा लगा बरसों का वह समय पल भर में कट गया
आओ साथ बैठ कर पुराने दिन याद करें
कुछ हम कहें कुछ तुम कहो
आओ मिले हैं इतने बरसों के बाद तो
कुछ हम सुनें कुछ तुम सुनो

❋❋❋

हर रिश्ता काई सा फट जाये

मेला है रिश्तों का रिश्तों का मेला
मेले में फिर भी हर कोई अकेला
समय जब पुकारे तो कोई न आये
ऐसे में हर रिश्ता काई सा फट जाये
तभी रिश्तों की वास्तविकता नज़र आये
कौन कितना अपना है कौन कितना पराया
यही विचार दिल को है आठों पहर आये
दुनिया में बहुत से लोग हैं ऐसे
जिन्होंने यह दर्द बहुत बार है झेला
कैसे सुनायें ज़िंदगी की कथायें
हर दिल में छुपी हैं अनगिन व्यथायें
जो बीता किसी पर वो कैसे भुलायें
जो देखे थे सपने वो कैसे सुलायें
कैसे अपने जीवन को पल-पल घुलायें
करें लाख कोशिश ग़मों को भुलाने की
जब-तब आ जाता है अहसासों का रेला
खो जाते हैं लोग उलझनों के जाल में
ख़ुद को फँसा लेते बड़े से बवाल में
कोई अपने नहीं आते देने सहारा
न मेरा कोई अपना न मैं किसी को प्यारा
तब इन्सान सोचता है कोई नहीं हमारा
दूसरों के मारे पत्थर भी सह लेते हैं
अपनों के मारे फूल भी लगते हैं ढेला
मेला है रिश्तों का रिश्तों का मेला
मेले में होता है हर कोई अकेला

❄❄❄

जिसको दिखाते अपने ग़म

काश कोई मिलता हमदम
हम जिसको दिखाते अपने ग़म
दुनिया में जीना है मुश्किल
है चारों तरफ़ मची किल-किल
सब बेच आये हैं अपना दिल
रह सकते नहीं कभी हिल-मिल
कोई पढ़ा हुआ कोई अनपढ़
कोई गढ़ा हुआ कोई अनगढ़
कोई काम नहीं करना चाहे
कोई काम ढूँढता फिरता है
कोई रिश्वत ले कर जीता है
कोई ईमानदारी में मरता है
रिश्ते नाते सब तोड़-तोड़ बच्चे जाते मुख मोड़-मोड़
बूढ़े माँ-बाप बने पत्थर जीवन में यह कैसा चक्कर
भाई है भाई का दुश्मन
मियाँ-बीवी में नित अनबन
दोनों ही अलग तो चले गये
बच्चे दो पाटों में पिस गये
कोई देश से धोखा करता है
कोई बगुला बन कर रहता है
कोई करता कारनामे काले
पर साधू बन कर रहता है
यह देख के रोता मेरा दिल
ढायें सब इक दूजे पे सितम
हम किसको दिखायें अपने ग़म
कोई जिसको दिखायें अपने ग़म

❋❋❋

यह तो ज़िंदगी नहीं

नहीं-नहीं-नहीं-नहीं
यह तो ज़िंदगी नहीं
भाव किसी के मन में नहीं भावनाओं का
मोल है नहीं किसी की कामनाओं का
ध्यान है नहीं किसी की प्रार्थनाओं का
मान है नहीं किसी की याचनाओं का
शायद अंत ही नहीं है यातनाओं का
समय किसी को नहीं है आराधनाओं का
अर्थ न कोई जानता है साधनाओं का
नहीं-नहीं-नहीं-नहीं यह तो ज़िंदगी नहीं

कहीं पे अत्याचार कहीं अनाचार है
कहीं पे दुर्व्यवहार कहीं बलात्कार है
छोटे और बड़े का कुछ लिहाज़ ही नहीं
कुछ न समझे कोई क्या ग़लत है क्या सही
टूट रहीं शनैः-शनैः रिश्तों की डोरियाँ
बढ़ रहीं अपनों के मध्य कैसी दूरियाँ
टूट रहीं क्षण भर में देखो जोड़ियाँ
नहीं-नहीं-नहीं-नहीं यह तो ज़िंदगी नहीं

बन्धु क्या भला यही आज का समाज है
कैसा स्वर्णमय था कल कैसा उसका आज है
क्या इसी समाज का साहित्य लिखा जायेगा
साहित्य दर्पण है समाज का अगर तो यही पढ़ा जायेगा
क्या यही पढ़ेंगे सब बच्चे भविष्य के
क्या प्रभाव पड़ेगा इन बच्चों के व्यक्तित्व पे
क्या लगेगा प्रश्नचिह्न उनके अस्तित्व पे
नहीं-नहीं-नहीं-नहीं यह तो ज़िंदगी नहीं

❋❋❋

ज़र्द पत्तों का दर्द

जो काम नहीं आते उन्हें कौन संभालता है
सूखे ज़र्द पत्तों को तो पेड़ भी गिराता है
छोड़ कर जगह नई कोपलों के लिये
बूढ़े पत्ते ख़ुशी से नीचे गिर जाते हैं
आया हवा का झोंका उड़ गये हवा के साथ
न जाने किस-किस दिशा में उड़ जाते हैं
मिल जाते हैं घास, फूस, मिट्टी, कंकड़, पत्थर में
दुनिया के पैरों तले यूँ ही कुचल जाते हैं
छोड़ आये जगह हम अपनी नस्लों के लिए
यही सोच-सोच कर ख़ुद ही बहल जाते हैं
हर बुज़ुर्ग देता है प्यार अपनी अगली पीढ़ी को
बस प्यार के दो बोल ख़ुद के लिये चाहता है
बन कर पत्थर की नींव ऊँचाई देता सीढ़ी को
अपने बच्चों को ऊँचा चढ़ते देखना चाहता है
काश बुढ़ापे से डगमगाते कमज़ोर पैरों को
मिलता रहे पुष्ट कन्धों का सहारा
तो सुनना न पड़े किसी बुज़ुर्ग को
जो काम नहीं आते उन्हें कौन संभालता है
काश! कोई समझ ले ज़र्द पत्तों के दर्द को
झाड़ दे उनके नसीब पर पड़ी ग़र्द को

❋❋❋

भागो गर्मी

गर्मी-गर्मी-गर्मी-गर्मी हाय कैसी गर्मी
जब ये अपनी पर आ जाती नहीं दिखाती नर्मी
गगन से बरसें आग के गोले
हवा के गरमा गरम झकोले
जिन्हें कहें हम लू के थपेड़े
गर्मी के ढंग कितने टेढ़े
किसी तरह आराम नहीं है
चैन सुबह या शाम नहीं है
लगा हो नलका सिर में जैसे
बहे पसीना टप-टप वैसे
बख़्शे नहीं किसी के प्राण
बच्चे बूढ़े और जवान
सभी घूमते घबराये से
साँस भरें सब छटपटाये से
कूलर ए.सी. की आफ़त
कम पड़ती उनकी ताक़त
जब हो जाती बिजली फेल
सबका ख़ूब निकलता तेल
पीते जायें पानी-पानी
याद आ रही सबको नानी
अक्सर हवा भी छुपे ऐंठकर
"देखूँ तमाशा मैं तो बैठ कर
मेरे बिना चले न काम
मिले न किसी तरह आराम"
हाथ जोड़ कर सभी कह रहे भागो गर्मी-भागो गर्मी
बहुत सताया आकर तुमने अब दिखला दो थोड़ी नर्मी

❄❄❄

उसके सपने और सबके सपने

वह एक बेटी थी—एक लाडली बेटी
जिसे देख कर, माता-पिता की आँखों में
सूरज, चाँद, सितारे सब चमक जाते थे
उच्च विचारों वाले संस्कारी घर की बेटी
उच्च विचार और उच्च शिक्षा मिली
पढ़ाई के साथ-साथ संगीत-नृत्य भी सीखा
सर्वगुण सम्पन्न बन रही थी माता-पिता की बेटी
पढ़ लिख कर एम.बी.ए. की डिग्री ले ली
साथ ही अच्छी सी नौकरी भी मिली
एक आई.ए.एस. लड़के के साथ शादी हो गई
यहीं से बेटी के नये जीवन की शुरुआत हो गई
नया जीवन पहले जीवन से एक दम उलट था
जहाँ पहले खरा सोना था वहाँ अब केवल गिलट था
सबसे पहला बलिदान हुआ नौकरी का
बाहर निकलने पर कड़ा प्रतिबन्ध था
बहू का हर कर्त्तव्य घर के अन्दर बन्द था
संगीत नृत्य की डिग्रियाँ भी काम न आईं
इनके लिये तो बहुत सख़्त थी मनाही
तार टूट गये सितार के धूल जम गई गिटार पे
गले के सुर रूठने लगे सारे शौक एक-एक कर छूटने लगे
कैनवस के सूख गये सारे रंग
जैसा उसका जीवन हो चला था बदरंग
जीवन के बदल रहे थे सारे ढंग
ससुराल में सब थे बड़े दबंग
नृत्य संगीत कला साहित्य
घुंघुरुओं की तरह बिखर गये

लिखना पढ़ना घर पर कुर्बान हो गये
ऐसे सारे शब्द उसके लिए अनजान हो गए
उसे अहसास हो चला है कि उसके सपने वीरान हो गये
फिर गोद में आये मुन्ना-मुन्नी
उसे लगा भगवान ने उसकी सुन ली
उसने अपने सपने भूलकर अपने सपने उनमें देखने शुरु कर दिये
घर के सारे सदस्यों के सपने पूरे करने की ठान ली
सास-ससुर पति को सेवा मिली
ननद देवर सबके सपने पूरे करने का व्रत पूर्ण हुआ
अपने बच्चों के सपने पूरे करने का वक़्त आ गया
सबके सपनों को पूरा करने के लिये अपने सपनों को मारती रही
सब मनचाहा पा कर ख़ुश थे वह तिल-तिल कर मरती रही
सबके सपने पूरे हुए पर किसी ने कभी यह न सोचा
क्या उसके भी कुछ सपने थे
या वो सिर्फ़ एक रोबोट थी
लोगों के सपने पूरे करने की मशीन
उसके सपने, उसकी ज़िंदगी सबके सपनों पर कुर्बान हो गये
फिर भी वह ख़ुश थी यह सोच कर कि
अगर वह अपने सपने पूरे करती तो शायद
अपनों के सपने टूट जाते
उसने अपना कर्त्तव्य पूरा किया
उसका जीवन उसके सपने कर्त्तव्य पर बलिदान हो गये
मैं सिर्फ़ एक प्रश्न पूछती हूँ–
क्या कोई ऐसी राह नहीं थी
जो दोनों के सपने पूरे करती
तब एक नारी की ज़िंदगी
बे मौत न मरती

❄❄❄

दिल भुला दे वो ज़माने

भूल जा ऐ दिल भुला दे वो ज़माने सब पुराने
अब नहीं आयेगा कोई तेरी सुनने या सुनाने
ज़िंदगी हाथों से कब फिसली नहीं कुछ याद अब है
पाँव के नीचे से निकली रेत जैसा लगता सब है
सुख भरा बचपन गया फिर बालपन यौवन गया
हर दिवस इतिहास बन माथे पे अंकित हो गया
मखमली यादों के साये आयें क्यों मुझको रुलाने

भूलना और याद रखना ज़िंदगी के संग रहते
फिर क्यों भूली यादों की, यादों में सबके अश्रु बहते
मेरे दिल के ज़ख़्मों पर कुछ नाम अपनों के लिखे हैं
तोड़ते थे मेरे सपने दिल में अब भी वो दिखे हैं
मेरी यादों में अभी भी आयें वो दिल को दुखाने

याद आते अम्मा बाबू सखियाँ बहनें और भाई
जिनके मीठे साथ में थी ज़िंदगी मैंने बिताई
बहुत से अपने जिन्होंने साथ सुख-दुख में दिया था
जिनके आगे मन की परतें खोल कर जीवन जिया था
बिछड़ जाने पर भी आते रोज़ सपनों में मनाने

आज सारे सुख और दुख सिर्फ़ अपना दिल ही सुनता
एक कोने में छुपा कर रखता उनको कुछ न कहता
कड़वी यादें मीठी यादें, रोज़ आ-आ कर सतातीं
दिल के जख़्मों का ख़ज़ाना रोज़ आ-आ कर बढ़ातीं
क्यों पुराने दिन यूँ आ जाते हैं नित मुझको सताने
अब न कोई आयेगा कुछ मुझसे सुनने या सुनाने

❋❋❋

एक मंज़िल और

कभी-कभी क्यों ऐसा क्षण आता है
जीवन में दूर-दूर तक शून्य नज़र आता है
वक़्त जैसे कहीं शून्य पर ठहर जाता है
दृष्टि क्षितिज तक घूम कर, लौट आती है उसी जगह पर
आकर टिक जाती है फिर उसी अंतहीन अँधकार पर
हाथ पैर मस्तिष्क और हृदय सब जैसे प्राणहीन हो जाते हैं
रिश्ते नाते बन्धु मित्र सब उसी शून्य में विलीन हो जाते हैं
यहाँ तक कि हम भी अस्तित्वहीन, लक्ष्यहीन,
दिशाहीन, गतिहीन हो जाते हैं
और हृदय कहता है कि चलो कहीं दूर-बहुत दूर
दुनिया की हलचलों से दूर, दुनिया के दलदलों से दूर
दुनिया के मेलों से दूर, भीड़-भाड़ के रेलों से दूर
ऐसे में कोई रहस्यमयी शक्ति आकर हृदय से कहती है
अपनी सम्पूर्ण शक्ति समेट कर एक बार आत्मविश्लेषण करो
दुनिया के कलह क्लेशों से दूर जाकर
अपने अस्तित्व के खण्डहर बने अवशेषों को
एकत्रित करके एक बार फिर
अपने अस्तित्व की प्राणहीन इमारत में
प्राण फूँक कर उसे फिर से खड़ा कर दो
उसमें एक मंज़िल और जोड़ कर
एक मंज़िल और ऊँचा कर दो, बड़ा कर दो
हर ठोकर के बाद एक मंज़िल और जोड़ दो
शून्यहीनता को दूर कहीं बहुत दूर छोड़ दो

❄❄❄

फ़ैसला आपके हाथ है

जो–
बिना तिथि, दिन या समय को ध्यान रखे
बिना ख़ुद के दुख-दर्द को महसूस किये
और दिल-दिमाग़ या शरीर के दर्द का ध्यान रखे
बिना किसी गिले, शिकवे, शिकायत के
बिना किसी अहसास, अनुभूति, भावना, कामना को बताये
हर ग़म को दिल के कोनों में
कई परतों के नीचे छिपाये
हर आँसू को आँखों की पलकों से ढक कर
अन्दर की ओर बहाये
घर के हर सदस्य की ग़लती को अपने सिर ले
सारे दुख ख़ुद ले कर औरों को सुख दे
यूँ ही कटती रहती है उसकी ज़िंदगी
टुकड़ों-टुकड़ों में बँटती रहती है उसकी ज़िंदगी
घर को बनाये रखने के लिए
वह ख़ुद को मिटाती रहती है
तिल-तिल कर ख़ुद को
पल-पल जलाती रहती है
अपना स्वत्व, अपना अस्तित्व, अपना अहं
सबको भुला कर
अपने परिवार को आगे बढ़ाती रहती है
जी हाँ–
लोग इसी को औरत कहते हैं
एक आदर्श नारी कहते हैं
सही या ग़लत
फ़ैसला आपके हाथ है

❋❋❋

कुछ अनकही कुछ अनसुनी

कुछ अनकही कुछ अनसुनी, मन ने कही मन ने सुनी
तूफ़ान सा ज्यों उठ गया, ऐसा लगा कुछ लुट गया
भूले नहीं जो हो गया
ऐसा लगा कुछ खो गया
मन में छुपी ब्रीड़ा भी थी
सब क्यों हुआ पीड़ा भी थी
अपनों से करना क्या गिला
ख़ुश रहना उसमें जो मिला
जो लुट गया अपना न था
जो हो गया सपना ही था
समझा के अन्तर ने कहा
है भूलना इक मन्तर बड़ा
आगे बढ़ो सब भूल कर
चलते रहो न शूल पर
मन ने शिकायत तो करी
कुछ-कुछ हिदायत भी करी
हँस कर कहा मानेंगे हम
ख़ुद को अधिक जानेंगे हम
मन ने भी हँस कर ये कहा
तुम मानने वाले कहाँ
तुम अपने मन के हो कहाँ
मन में तुम्हारे कुल जहाँ
कुछ अनकही कुछ अनसुनी
मन ने कही मन ने सुनी
हम भी गुणी मन भी गुणी
उसने कही हमने सुनी

❊❊❊

दिल की जगह

हंमने कभी सोचा न था कि दिल भी कोई चीज़ है
जब समझ आया तो पाया यह बड़ा नाचीज़ है
पल में तोला पल में माशा क्या कोई तहज़ीब है
रो के हँसता, हँस के रोता दिल भी कितना अजीब है
फुदकता है यहाँ-वहाँ काबू में रहता ही नहीं
कुदकता है कहाँ-कहाँ इक राह बहता ही नहीं
दिल जिधर को घूम जाये अक़्ल भी जाये वहीं
ज़िंदगी इन्सान की दिल के छलावे में रही
ठीक शायद कहा शायर ने कि दिल कोई पत्थर नहीं
पर अगर दिल ही नहीं तो फिर कोई चक्कर नहीं
इसलिए अगले जनम में ऐ ख़ुदा सुन ले ज़रा
धड़कते दिल की जगह रखना बड़ा पत्थर ज़रा

❋❋❋

जाने दिल वाला–तुक्तक

दिल के अन्दर कौन है रहता
कोई न उसको जाने है
एक बार जो जान ले उसको
वह फिर दिल की माने है
दिल में है कितनी गहराई
जाने क्या-क्या छुपा हुआ
दिल की बातें दिल ही जाने
या फिर जाने दिलवाला

मीठी-मीठी बातें सुन कर
ख़ुद ही दिल को लुटा दिया
प्रियतम मैंने तेरी खातिर
ख़ुद ही ख़ुद को मिटा दिया
लोग कहें मुझको दीवाना
मैं सुनकर हँस देता हूँ
मिटने में भी एक मज़ा है
दिल जाने या दिलवाला

मैं भी प्यासा दिल भी प्यासा
दो प्यासे मिल कर बैठे
दिल की प्यास होंठ तक आई
फिर भी जाने क्यों ऐंठे
मुँह से कुछ भी कह न पाये
फिर भी दिल ने बता दिया
दिल पल-पल क्यों ऐंठ दिखाता
दिल जाने या दिलवाला

मेरे सागर जैसे दिल में
आतीं नदियाँ बह-बह कर
मैं भी उनसे बतियाता हूँ
दिल की बातें कह कह कर
फिर भी जाने कितने झरने
झर-झर झरते रहते हैं
इनकी बातें ये ही जानें
या फिर जाने दिलवाला

बहुत उड़ानें ऊँची भरता
पर मंज़िल का पता नहीं
दूर गगन की छाँव तले ही
मेरी मंज़िल छुपी हुई
पंख कहीं न काटे कोई
यूँ ही डरता रहता दिल
किस-किस से कितना डर लगता
दिल-जाने या दिलवाला

लम्बी राहें तय कीं फिर भी
अभी सफ़र तो है आधा
काँटों में उलझा है दामन
कदम-कदम पर है बाधा
शूल बिछाते हैं पग-पग पर
कैसे ये दुनिया वाले
कैसे चलते हैं काँटों पर
दिल जाने या दिलवाला

❄❄❄

भूल जाओ क्या हुआ

बन्धु मेरे–
भूल जाओ क्या हुआ
याद रखो जो हुआ अच्छा हुआ
जो बुरा हुआ वह तो एक सीख थी
प्रभु की बहुत बड़ी भीख थी
जिसने बहुत कुछ सिखा दिया
हर ठोकर ने एक नया रास्ता दिखा दिया
अच्छे बुरे का फ़र्क बता दिया
संसार में क्या-क्या हो सकता है जता दिया
अब सीखे हुए नये ज्ञान के साथ
भविष्य से मिला लो हाथ
अब किसी ठोकर से न डरना
तुम्हें आगे बहुत कुछ है करना
जो व्यक्ति गिरने के बाद
संभलने की हिम्मत कर सकता है
जो हर बुराई के पीछे
एक अच्छाई ढूँढ सकता है
कुदरत भी जानती है
यह इन्सान ख़ुद पर ऐतबार कर रहा है
उठो पूरी सृष्टि तुम्हारे साथ है
नया भविष्य तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है
भूल जाओ कल क्या हुआ
जो हुआ अच्छा हुआ

❄❄❄

सर्द रिश्ते कैसे निभ पायें

है कहाँ मंज़िल कहाँ रखते कदम हम क्या करें
हम परेशां हैं कहाँ जायें कहो हम क्या करें
शहर की इन बस्तियों में जी रहे जो लोग हैं
क्या कहें इन्सान उनको तुम बताओ क्या करें
न सफ़ाई, न पढ़ाई, पेट भर खाना नहीं
जी रहे हैं फिर भी उनको देख कर हम क्या करें
सब तरफ़ है भीड़ फिर भी है अकेला हर कोई
इस अकेलेपन के डर को देख कर हम क्या करें।

झूठ धोखा और लालच आज के आदर्श हैं
गुम कहाँ पर हो गया ईमान बोलो क्या करें
पत्थरों के जंगलों में लोग पत्थर के रहें
दिल पे पत्थर रख के हम पूछा करें हम क्या करें
टुकड़ा-टुकड़ा कर के कटती ज़िंदगी सबकी यहाँ
दिल के टुकड़े सहम कर जीते यहाँ हम क्या करें
काग़ज़ों पर ख़ून से लिखे हुए अक्षर यहाँ
इक नया इतिहास लिखा जा रहा हम क्या करें।

दर्द की लहरों में जीते और मरते दर्द में
ढूँढते हैं राह मंज़िल की कहो हम क्या करें
ख़ून के रिश्ते ख़त्म होते हैं ख़ूनी खेल से
इक नई दुनिया बनाते लोग अब हम क्या करें
प्यार के रिश्ते बन जाते हैं रिश्ते दर्द के
सर्द रिश्ते कैसे निभ पायें कहो हम क्या करें
है कहाँ मंज़िल कहाँ रखते कदम हम क्या करें
हम परेशां हैं कहाँ जायें कहो हम क्या करें

❋❋❋

मुख से निकलती आग

दिल चाहता है तुम्हें कुछ सुनाना
जीवन की वास्तविकता तुमको दिखाना
कुछ कल्पनाओं को कल्पना ही रहने दो
जो कल्पना कहती है उसे जीभ को न कहने दो
कल्पना का वास्तविक बनना कभी-कभी कलपाता है
किसी को जलाने से पहले इन्सान ख़ुद को जलाता है
किसी को काँटा चुभाने से पहले
अपने मन में कुछ काँटे पहले गड़ते हैं
काँटों के अन्दरूनी ज़ख़्म बढ़ते हैं
एक अँगुली किसी की ओर करने के साथ
चार अपनी ओर झुकती हैं
किसी को कुछ ग़लत कहने से पहले
एक क्षण को आत्मा की आवाज़ पर
जीभ भी रुकती है
किसी पर क्रोध करने से पहले
हमारे अन्दर प्रकट होती है क्रोधाग्नि
उस अग्नि को निकालने के लिये
प्रज्वलित होती है मुखाग्नि
मुख से निकली आग
जला देती है रिश्तों को
दानव में बदल देती है फ़रिश्तों को

❄❄❄

सफ़ेद मुखौटा

बगुले के श्वेत चमकदार पंखों जैसे
सफ़ेद कपड़े पहन कर
पूरी दुनिया की कालिख का भण्डार
अपने दिल में वहन कर
रोज़ वो निकलते हैं
एक सफ़ेद मुखौटा लगा कर
दिन भर दबे रहते हैं
उस झूठे मुखौटे के बोझ तले
घर आते ही टाँग देते हैं उसे
कोने वाली कील पर
फिर अपना असली चेहरा लगाकर
प्यार से देखते हैं ख़ुद को आईने में
एक लम्बी सुकूनभरी
मुस्कान के साथ कहते हैं
कितना आनंद मिलता है
दुनिया को मूर्ख बनाने में

❄❄❄

कौन सी किताब थी

जब वह छोटा बच्चा था
सब बच्चों के गले में हाथ डालकर
ठुमक-ठुमक कर घूमता था
थोड़ा बड़ा हुआ तो सबके साथ
ख़ूब खेलता था ख़ूब झूमता था
कक्षा में सहपाठियों के साथ
प्रेम से पढ़ता था
कोई वर्ग भेद, जाति भेद, धार्मिक भेदभाव
ऊँच-नीच, छुआ-छूत, अमीर-ग़रीब का अलगाव
कभी सपने में भी नहीं था
दिल दिमाग़ में बचपन की
छोटी-छोटी ख़ुशियाँ और छोटे-छोटे ग़म लिये
भोलेपन में भविष्य के सपने गढ़ता था
सारी किताबों में पढ़ता था—
भक्ति की, नीति की, बहादुरी की, ईमानदारी की,
देशभक्ति की प्रेरणादायक कहानियाँ
स्नेह, प्रेम, सहिष्णुता, सहानुभूति की कहानियाँ
फिर वह कौन सी किताब थी
जिसने उसे अलगाववाद, आतंकवाद,
स्वार्थ, लालच, धर्मान्धता के पाठ पढ़ा दिये
तरह-तरह के राजनीति, कूटनीति के
दाँव-पेंच सिखा दिये
जिसने घर-परिवार, समाज सबके पढ़ाये
प्रेम प्यार के पाठ भुला दिये
जिसने ख़ून के रिश्ते तक झुठला दिये

❊❊❊

दिन में कहानी

रोज़ रात को माँ सुनाती थी कहानी
दिन में कभी नहीं सुनाती थी
दिन में कहानी सुनाने से
मामा रास्ता भूल जाता है
यह उसे नानी बताती थी
माँ ने बताया मेरे एक मामा हैं
पर मैंने तो मामा को देखा ही नहीं
मैंने तो दिन में कभी कहानी सुनी ही नहीं
फिर मेरे मामा
मेरे घर का रास्ता कैसे भूल गये
मुझे नहीं पता मामा कैसे होते हैं
और मामी कैसी होती है
माँ तो बस
मामा-मामी को याद करके रोती है
हर राखी-भैयादूज पर
ताकती रहती है द्वार पर
हर आहट पर समझती है
शायद आज मामा को रास्ता याद आ गया
पर वह दिन तो कभी भी नहीं आया

❄❄❄

तिक्कियाँ

ज़िंदगी ख़ुदा की नेमत
पहचानो इसकी कीमत
जियो और जीने दो।

किसी का भला कर सको तो करो
किसी का भला न कर सको तो न करो
पर किसी का बुरा भी न करो।

जब हम पहचानने लगते हैं अपनी आत्मा को
तब प्रभु भी हमारा साथ देने आ जाते हैं
क्योंकि आत्मा में ही तो परमात्मा है।

विश्वासघात किया देश के साथ
देश पर छाई कष्टों की काली रात
सोचो हमने क्या किया ख़ुद के साथ।

नारे लग रहे हैं देश के टुकड़े-टुकड़े कर देंगे
भारत को बर्बाद करके रख देंगे
पर भारत की बर्बादी के बाद ये लोग रहेंगे कहाँ?

जो भी होगा देश के साथ
सीधा करेगा हम पर आघात
तब शायद समझो—क्यों किया देश से विश्वासघात।

सबको पता है सब ख़ुदा के बन्दे हैं
फिर क्यों स्वार्थ में बने रहते अन्धे हैं
इन्सान के ये कैसे उल्टे धन्धे हैं।

दूर से आ रही हैं नारों की आवाज़ें
सुन कर लोगों ने बंद कर लिये दरवाज़े
कुछ समझ नहीं पा रहे कहाँ भागें किधर भागें।

❊❊❊

वर्तमान के घेरों में

मैं इस दुनिया में अम्मा बाबूजी की तीसरी बेटी बनकर आई
फिर भी अम्मा-बाबूजी और दोनों बड़ी बहनों की लाडली कहलाई
शैशवकाल में खेलें खेल और वो तोतली बातें
बाद में जिन्हें याद करके सब मिल बैठ कर हँसते थे
फिर शुरु हो गई पढ़ाई लिखाई और साथ ही
सखियों के संग खेलना, गुड़ियों के संग खेलना
तरह-तरह के खेल घर में या बाहर खेलना
लूडो, साँप सीढ़ी, गिट्टे खेलना, रस्सी कूदना
झूला झूलते-झूलते गाने गाना
चोर छिपाई खेलना, एक दूसरे को ढूँढना
वो चंदा मामा, बादलों और तारों से ढेर सारी बातें करना
माँ से लोरियाँ और माँ, दादा-दादी से कहानियाँ सुनना
बाहर सखियों संग और घर में भाई बहनों संग लुकाछिपाई खेलना
कभी माँ की रसोई में छोटी-छोटी रोटी बेलना
माँ का उन्हें सेंक कर घी लगाकर मुझे खिलाना
फिर आगे न जाने कैसे सपनों में
बीत गये स्कूल कॉलेज के दिन
मैं घिर गई दीवारों के घेरों में
फिर एक दिन बाँध दी गई सात वचनों के फेरों में
वो लुका-छिपी, छिपम-छिपाई छुप गई
अतीत के अँधेरों में
ज़िंदगी बँधकर रह गई घर-गृहस्थी
परिवार, समाज के पहरों में
दिन, हफ्ते, बरस कब बीत गये

कैसे ज़िंदगी के दिन रेत से हाथों से खिसक गये
पता ही नहीं चला
पहुँच चुके थे हम वर्तमान के नये अनजाने सवेरों में
काश ये नये सवेरे भी
बचपन के दिनों जैसे सुहावनें होते
मेरे पल-पल स्कूल कॉलेज के दिनों जैसे मनभावने होते
लेकिन वर्तमान की वास्तविकता आ चुकी थी सामने
खेल-कूद, हँसी ठिठोली, गाने चुटकुले पड़े भुलानें
यहाँ तक कि अपना अस्तित्व भी
गुम हो गया न जाने कहाँ
अजीब स्थिति में शून्य बन कर रह गया पूरा जहाँ
ज़िंदगी की जंग चलती रहती है दिन के आठों पहरों में
उलझती रह गई ज़िंदगी उलझनों के घेरों में
वर्तमान में दिन लम्बे और रातें भी
लम्बी और अँधियारी हैं
सिर पर कर्तव्यों और संघर्षों की
लटकती रहतीं तलवारें दोधारी हैं
शायद नज़र लग गई किसी की सवेरों में
बचपन की वो छिपा-छिपी
छुप गई अतीत के अँधेरों में
आज में घिरी हुई हूँ
सिर्फ़ वर्तमान के घेरों में

❄❄❄

ये दो आँखें

कितनी बातें करतीं आँखें पल-पल रंग बदलतीं आँखें
बचपन से सुनते आये हैं दिल का दर्पण होतीं आँखें
पल में आँख भँवों तक खींची पल में सीधी तिरछी आँखें
कभी प्यार ममता दिखलातीं, क्रोध घृणा दिखलातीं आँखें
भय से विस्फारित हो जायें यादों में खो जायें आँखें
दुख में तो रोती हैं आँखें खुशियों में भी रोतीं आँखें
परिचय कभी दिखातीं आँखें कभी अपरिचित बनतीं
आँखें परिचय और अपरिचय का सच ही तो बतलाती हैं
आँखें कभी शून्य बन जाती आँखें कभी मदभरी होतीं
आँखें कभी खुशी छलकाती आँखें कभी ग़म भरी होती
आँखें झुक-झुक जायें रुक-रुक जायें घबराती शरमाती
आँखें कभी त्यौरियाँ जब चढ़ जायें घूर-घूर कर देखें आँखें
मोह भरी आँखों की भाषा बिन भाषा के बोलें आँखें
छोह भरी आँखों की भाषा मन की भाषा बोले आँखें
कभी हुकुम देती हैं आँखें कभी याचना करती आँखें
प्रभु के आगे नतमस्तक हो मगन प्रार्थना करती आँखें
पल भर में गम्भीर दिखें और पल भर में हों चंचल
आँखें पल में तोला पल में माशा बड़ी अनोखी हैं ये
आँखें सपनों की सपनीली आँखें जागे में रतनारी आँखें
कजरा से कजराई आँखें कुदरत की कजरारी आँखें
दिखलायें यादें अतीत की कभी भविष्य को खोजें आँखें
जीवन के नवरस की छटायें दिखलाती हैं ये दो आँखें
कितनी बातें करतीं आँखें पल-पल रंग बदलती आँखें
बचपन से सुनते आये हैं दिल का दर्पण होती आँखें

❄❄❄